ॐ

जुड़ने और जोड़ने के लिए

# कान्यकुब्ज वाणी

2025

महाकुंभ 2025

## धर्म की शक्ति

## धर्म का अर्थशास्त्र

# कार्यकारिणी अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा 2025

संरक्षक

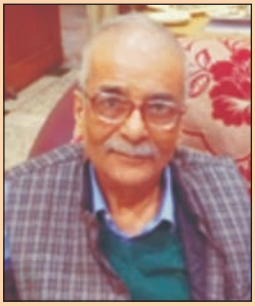

न्यायमूर्ति डी के त्रिवेदी

अध्यक्ष

ए के त्रिपाठी, एडवोकेट

उपाध्यक्ष, सम्पादक

डॉ. डी एस शुक्ला

उपाध्यक्ष

कु.प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा

महासचिव / कोषाध्यक्ष

राकेश शुक्ला

उपसचिव

कृपाशंकर दीक्षित

वरिष्ठ सदस्य

आर पी अवस्थी
एडवोकेट

विशिष्ट सदस्य

डॉ. वी के मिश्रा

धीरेन्द्र कुमार
दीक्षित, एडवोकेट

उप-सम्पादक

डॉ. अनुराग दीक्षित

**ज्ञानं देहि स्मृतिं विद्या, शक्तिः शिष्य प्रबोधनीम्।**
**ग्रंथकर्तं शक्तीं च सुशिष्यं सुप्रतिष्ठितम्।।**

विद्या की अधिदेवते**!** तुम मुझे ज्ञान, स्मृति, विद्या, प्रतिष्ठा, कवित्व शक्ति, शिष्यों को समझाने की शक्ति तथा ग्रन्थ रचना की क्षमता दो। साथ ही मुझे उत्तम एवं सुप्रतिष्ठित शिष्य बना लो।

# विषय सूची


| | | |
|---|---|---|
| | सम्पादकीय : धर्म सत्ता और इसका अर्थ-शास्त्र | 3 |
| 1. | आवरण कथा-1: महाकुम्भ का समाज-दर्शन - प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित | 5 |
| 2. | आवरण कथा-2: **Chola Dynasty's Temple Economy - Aadrika Shukla** | 9 |
| 3. | भाषा शब्द और विचार / -विनीता मिश्रा | 13 |
| 4. | चिरयौवना अयोध्या | 15 |
| 5. | कर्ज / -डॉ. अमिता दुबे | 21 |
| 6. | भला आदमी क्या कर लेगा? / -डी सी अवस्थी | 26 |
| 7. | प्रचार की शक्ति अथवा पॉवर ऑफ नैरेटिव और कुमारिल भट्ट - तिलक शुक्ला | 27 |
| 8. | मानस में गोमती अर्थात् मनुष्य के मन और बुद्धि का सम्बन्ध - विनीता मिश्रा | 31 |
| 9. | एक और जिहाद / -महेश चन्द्र द्विवेदी | 37 |
| 10. | जिनके सहयोग के हम आभारी हैं | 45 |
| 11. | मंच पर पुरुस्कार / साइकिल पाने वाली छात्रायें | 46 |
| 12. | कान्यकुब्ज वाणी आभा मण्डल | 47 |
| 13. | शिशिर श्रृंगार / -डॉ. शोभा बाजपेयी | 56 |
| 14. | कबाड़ / -आलोक कुमार दुबे | 57 |
| 15. | तलवार की धार के वे क्षण / -डॉ. डी.एस. शुक्ला | 63 |
| 16. | अतीत की यादें / -डॉ. आर.एन. भारद्वाज | 67 |
| 17. | आज नहीं / -प्रमोद कुमार दीक्षित (राजन) | 69 |
| 18. | होली पर रंग किसे लगायें / -उपेन्द्र नन्दन शुक्ल | 75 |
| 19. | दाता एक राम... / -डा डी के मिश्र | 76 |
| 20. | कीर्तन लाभ / -स्व. इं. सत्यानन्द दीक्षित | 77 |

सम्पादकीय

# धर्म सत्ता और इसका अर्थ-शास्त्र

भारत के अभ्युदय में धर्म सत्ता का बड़ा योगदान रहा है। धर्म भारत के कण-कण में नहीं उसके डी.एन.ए. में रचा बसा है। गोस्वामी जी के अनुसार भारत में "जब जब होय धरम की हानी..." अर्थात धर्म का पतन हुआ और आसुरी (दुष्ट) शक्तियाँ हावी हुईं, तब तब अधर्म का विनाश और धर्म की स्थापना हेतु स्वयं ईश्वर को भूलोक पर "धर्म संस्थापनाय" अवतरित होना पड़ा।

इतिहास गवाह है कि भारत धर्म सत्ता के कारण ही सदियों तक वैभवशाली होकर विश्व गुरु के रूप में स्थापित रहा। केवल भारत की पुण्य भूमि है जिसमें धर्म का अर्थ पूजा पद्धति नहीं रहा। धर्म राजा को नीति मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन करता था। राजा 'राज-दंड' भी धर्म रक्षार्थ धारण करता था। धर्म प्रवृत्त राज्य में प्रजा भी भयमुक्त होकर कृषि और वाणिज्य द्वारा समृद्ध और सशक्त रही।

मंदिर या देवालय धर्म के केंद्र होते थे। मंदिर पूजा अर्चना के अलावा देश की आर्थिक प्रगति में भरपूर सहयोग करते थे। विख्यात देवालय धर्म पर्यटन के माध्यम से बड़ी मात्रा में रोजगार और राजस्व के स्रोत थे। वृहत मंदिर क्षेत्र में धर्मशालायें, पानी एकत्र करने के लिए बाँध और नहरें होती थीं जो अकाल के समय पड़ोस के इलाके में सिंचाई में मदद करती थीं। इस प्रकार ये देवालय केवल पूजा-स्थान न होकर देश की अर्थव्यवस्था में भी योगदान देते थे। (देखें आर्दिका का 'चोला साम्राज्य का मंदिर अर्थशास्त्र')

उत्तर प्रदेश में विगत वर्षों में यह 'मंदिर अर्थशास्त्र' (टेम्पल इकोनोमी) पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है जिससे अयोध्या, काशी, मथुरा, और अब संभल टेम्पल इकोनोमी के हब बन गए। वहीं इसी वर्ष प्रयागराज में आयोजित 45 दिन के महाकुम्भ ने विश्व के सभी रिकार्ड तोड़ दिए।

महाकुम्भ गंगा किनारे 4000 एकड़ क्षेत्रफल में आयोजित किया जा रहा है। यह क्षेत्रफल लखनऊ की इंदिरा नगर कालोनी के क्षेत्रफल के आधे से कुछ अधिक है। इस छोटे से भूभाग पर 66 करोड़ से अधिक तीर्थ यात्री सम्मिलित हुये। इसकी भव्यता का अनुमान यूँ लगाइए कि 45 दिनों के अन्दर हमने अमरीका की दो गुनी

जनसँख्या को इस छोटे से क्षेत्र में अमृत-स्नान करा दिया। इन 45 दिनों के दौरान 18 लाख से अधिक केवल विदेशी पर्यटकों ने इस पुण्य क्षेत्र में डुबकी लगाई। महाकुम्भ से अनुमान है कि भारत की जी.डी.पी. में लगभग 2.5-3% की वृद्धि की अपेक्षा की जा रही है।

इस छोटे से इलाके में अमेरिका और कनाडा देशों की जनसँख्या से अधिक लोगों के रहने, खाने, स्नान करने, व साफ-सफाई की व्यवस्था कितनी व्यापक है, इसका अनुमान साधारण जन नहीं कर सकते।

इससे पहले के कुम्भ आयोजनों में प्रारंभिक दिनों में भारी भीड़ होती थी जो धीरे-धीरे कम होने लगती थी किन्तु इस बार प्रारंभ में भीड़ कम थी। कुम्भ से लौटे यात्रियों से महाकुम्भ प्रबंधन की प्रशंसा सुन कर स्नानार्थियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। उत्तर-पूर्व में त्रिपुरा से लेकर पश्चिम में पाकिस्तान और अमरीका तक, उत्तर में जम्मू-कश्मीर से लेकर केरला-तमिलनाडु तक से लाखों की संख्या में तीर्थार्थी प्रयागराज में आये। त्रिपुरा जैसे छोटे प्रदेश से अनुमानतः 8-10 लाख लोग त्रिवेणी संगम आये। परिणामतः मोटर गाड़ियों का प्रयागराज आने वाली हर सड़क पर लगभग 25 किलोमीटर का जाम लग गया। इसके बावजूद सुन्दर प्रबंधन के चलते सभी यात्री स्नान करने के उपरांत प्रसन्न-वदन वापस अपने घर लौट गए।

सत्य है कि 2025 के महाकुम्भ ने सदियों बाद भारत में धर्म स्थापना की पुनः नींव डाल दी है।

इस विशिष्टता के कारण 'कान्यकुब्ज वाणी 2025' का मुखपृष्ठ महाकुम्भ आयोजन को समर्पित है।

•

आवरण कथा-1

# महाकुम्भ का समाज-दर्शन

**- प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित**

वर्तमान संदर्भ में कुंभ मेले की प्रासंगिकता का प्रश्न भी विचारणीय है। कभी-कभी देश-विदेश के कुछ कुतर्की-दुराग्रही लोग यह प्रश्न छेड़ देते हैं कि इतने बड़े आयोजन से क्या लाभ? इससे कितनों को रोजी-रोटी मिलती है? क्या एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र से यह अपेक्षित है कि केन्द्र और राज्य की सरकारें अन्य कार्य-कलाप छोड़कर एक धार्मिक मेले के आयोजन में इस तरह अस्त-व्यस्त हो जायें? क्या यह नौकरशाहों की कमाई का बहाना नहीं है? क्या इतनी बड़ी भीड़-भाड़ जुटाकर हम सैकड़ों निर्दोष व्यक्तियों की जान से नहीं खेलते हैं? क्या यह एक राजनीतिक दल का ही प्रचार मेला नहीं है? आज उनका आरोप है कि वहाँ भगदड़ में हजारों मारे गये हैं। लाशें गंगा में फेंकी गई हैं। पानी विषाक्त हो गया है। अब वहाँ नहाने लायक नहीं रहा।

वस्तुतः ये प्रश्न भारत में सत्तारूढ़ पार्टी को बदनाम करने के उद्देश्य से इधर विपक्षियों द्वारा उठाये जा रहे हैं। वे हताशा के कारण अब कुछ ज्यादा ही मुखर हो गये हैं। प्रतिपक्षियों को लगता है कि ऐसा विरोध व्यक्त करने से दलित-मुस्लिम-तुष्टीकरण होगा। और तभी उनका राज्य कायम होगा। कम्युनिष्टों का कुछ गम गलत होगा और सनातन विरोधी विश्व शक्तियों, मुख्यतः 'डीप स्टेट' को यह संतोष अनुभव होगा कि उनके 'एजेंट' भारत में अच्छा विघटन फैला रहे हैं। विश्व में ईसाइयत और इस्लाम के 'क्रुसेड' चलाने वाले अब सनातन की उठती ताकत से क्षुब्ध हैं। इधर जो हिंदू नवजागरण हुआ है, उससे धर्मांतरण की प्रक्रिया रुक सी गयी है। इसलिए कुंभ जैसी धर्म-लहर को कोसना उनकी प्रवृत्ति हो गयी है। दूसरी ओर, विश्व की बड़ी आर्थिक शक्तियाँ कुंभ के माध्यम से प्रकट होती हुई इस नई भारतीय ऊर्जा से चिंतित हो उठी हैं। सोरोस, पन्नू, पिंग जैसे कुचक्रियों ने इसीलिए अपने पालित पप्पुओं को भूँकने का ठेका दे दिया है। फिर भी सनातनी समाज गहरी आस्था के साथ गज-गति से अपने रास्ते चलता चला जा रहा है। जाँच कमेटी के कारण षडयंत्रकारी चिन्तित हैं और चिल्ला रहे हैं।

विशेष आवश्यकता है, सकारात्मक सोच की। विचारणीय है कि अर्ध कुंभ, पूर्ण कुंभ, महाकुंभ द्वारा कितनी भावात्कता एकता पैदा होती है! जाति, संप्रदाय,

लिंग, वर्ग, क्षेत्र, भाषा-भेद से जुड़ा सनातनी समुदाय प्रायः डेढ़-डेढ़ महीने तक इन पाँच, छह जगहों पर आयोजित कुंभ मेलों में संकीर्णताओं से ऊपर उठकर भाईचारे का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है। अब तो इसमें मुस्लिम भाई-बहनों का भी सहयोग मिलने लगा है, हालाँकि उन्हें बहुत भड़काया गया था कि कुंभ मेले में तुम्हें स्थान नहीं दिया गया है। 'वक्फ बोर्ड' ने पहले इस पर अपना दावा पेश किया था, पर बाद में 'बक्स' दिया। यह सौहार्द का सूचक है। इससे स्पष्ट है कि इस प्रकार के आयोजन जहाँ-जितने होंगे, साहचर्य-सौहार्द बढ़ता चला जायेगा और एक दिन लगभग डेढ़ अरब की आबादी वाला यह महादेश फिर 'विश्वगुरु' बन जायेगा।

कुंभ में हमें विश्व हिंदू समुदाय के दर्शन होते हैं। पड़ोसी हिंदू देश नेपाल इसमें सोत्साह शामिल होता है। विश्व स्तर पर बिखरे हिन्दू तथा सनातनी संस्कृति से प्रभावित नर-नारी-समुदाय को यहाँ दीक्षा मिलती है। मेले में विचरण करते हुए, चमत्कारी संतों, हठयोगियों से भेंट करते हुए, पुराख्यानों, धर्मग्रन्थों का श्रवण करते हुए लोग अपनी भूली-बिसरी गौरवमयी परम्पराओं को ताजा कर लेते हैं। दक्षिण भारत तथा ग्रामीण भारत तो इसमें पूरा उमड़ पड़ता है। मोक्षकामी माता-पिता-पितामह को कंधों पर लादकर, मीलों पैदल चलकर जब संगम में डुबकी लगवा देते हैं तो सबको जीवन की सार्थकता का बोध होता है।

संप्रति महाकुंभ (प्रयाग) स्वतंत्र जिला बन गया है। उसमें कई कारिडोर हैं। 'कल्पवृक्ष कारिडोर' में स्पष्ट दिखता है कि अकबर ने इलावर्त, प्रतिष्ठानपुर प्रयागराज को ध्वस्त करने की कितनी बड़ी योजना बनायी थी। कुंभ में आये नागा अखाड़ों की शक्ति से भयभीत होकर, कल्पवृक्ष को काफी कटवाकर, उस परिसर को काफी मिटाकर वहाँ एक किला बनवाया, भारी फौज कायम की, तीर्थ यात्रियों को काफी डराया-धमकाया, लेकिन कुंभ मेला नहीं रोक पाया। अल्लाह के नाम पर उसने प्रयाग को 'इलाहाबाद' बना दिया था। सौभाग्य से यह क्षेत्र पुनः 'प्रयागराज' रूप में सुगठित हो गया है। इधर सरस्वती कूप, पातालपुरी हनुमान मंदिर, मनकामेश्वर मंदिर, नागवासुकि, बारह माधव, भरद्वाज आश्रम, अरैल और दर्जनों घाटों का पुनरुद्धार हो गया है। सुरक्षा, सफाई, यातायात व्यवस्था एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम लोगों को आकृष्ट करते हैं। परिणामतः इतना विराट जन-प्रवाह गंगा, यमुना, सरस्वती के संगम में उमड़ने लगा। इससे समूचा विश्व चकित है। जन संपर्क विज्ञानी सोच नहीं पा रहे हैं कि इतनी भीड़, इतनी अवधि तक, एक स्थल पर कैसे समायोजित हो जाती है? मक्का-मदीना में हाजियों के हुजूम को

भी मात दे दी कुंभ में। गिनीज बुक भी हैरान है। यह भी कि कुंभ तब से चल रहा है, जब इस्लाम, ईसाइयत का जन्म भी नहीं हुआ था? दिनों दिन कुंभ यात्रियों की संख्या बढ़ती जा रही है। व्यक्तिवाद, भोगवाद, नास्तिकता एवं अलगाववाद के इस दौर में पचास करोड़ की यह भीड़ विस्मयकारक तो है ही।

तथ्य यह है कि कुंभ मेले की योजना बनायी गयी थी ऐतिहासिक आवश्यकता-विवशता के कारण। यहाँ बर्बर विदेशियों के आक्रमण छठी शताब्दी से सिंध में शुरू हो गये थे। वे धर्मांतरण पर आमादा थे, अतः हिन्दुत्व की रक्षा के लिये विभिन्न मत-वादों में बँटे सनातनी समाज को एकजुट करना जरूरी था। महान क्रांतद्रष्टा शंकराचार्य जी ने तीनों समुद्रों ओर हिमालयी दर्रों से जुड़े, देश के चारों सीमांतों (प्रवेश द्वारों) पर चार धाम प्रतिष्ठित करके, तीर्थों के रूप में ऐसी सुरक्षा-चौकियाँ स्थापित कर दीं, जहाँ से इन अवांछनीय तत्वों की निगरानी हो सके। तभी 'मध्य देश' नाम से विख्यात इस क्षेत्र में एक महा मेला की युक्ति निकाली गयी। इस महाप्रबंधन के कारण लगभग हजार वर्षों के उत्पात के बावजूद आज तक हमारी हस्ती बरकरार है।

इन मेलों को आकर्षक बनाने के लिये इसके मुहूर्त-निर्णय के साथ ग्रह, उपग्रह, सिंहस्थ, नक्षत्र वेला में संभावित अमृत वर्षा का योग जोड़ दिया गया और साथ ही "एडवंचर" भी जोड़ दिया गया। प्रयाग के सभी स्नान, मुख्यतः संक्रान्ति, मौनी अमावस्या, माघी पूर्णिमा और वसंत 'स्नान शूरता' की चुनौती बन गये। इस चुनौती में सर्वोपरि सिद्ध हुए नागा, अखाड़े, क्योंकि ये नागा साधु प्रायः देहातीत होते हैं। सनातन को बचाने में निरंतर सक्रिय रहा है यह बलिदानी जत्था। इसमें अकाली, खालसा सिक्खों की भी बड़ी भूमिका रही है, साथ ही मराठा पेशवाइयों की भी। इन सबके प्रति सनातन समाज में अकूत या प्रभूत श्रद्धा भाव है। ये मेले के मुख्य आलंबन होते हैं। इनका अपना धर्मतंत्र है, अपनी धर्मध्वजा है। सत्ता सदैव उनके आगे नतशिर रही है। मुगल और अंग्रेज भी उनसे डरते रहे हैं। आज भी उनसे प्रेरित होकर नागा साधु बनते हैं; प्रशिक्षण लेते हैं। विभिन्न संप्रदायों से युक्त 'धर्म संसद' में यहाँ शंकराचार्यों, महामंडलेश्वरों और मठाधीशों का अभिषेक होता है। पदावनति और पद-वंदन भी। यह धर्म तंत्र इस बात का प्रमाण है कि झण्डे भले ही बदल गये हों, पर भारत माता कभी किसी की गुलाम नहीं रही। सर्वतंत्र स्वतंत्र स्वराज्य-मनोराज्य का प्रादर्श है कुंभ महोत्सव**!**

एक महत्वपूर्ण पक्ष है, अर्थतंत्र का। कुंभ जैसे मेलों से धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलता है। इसमें देश-देशांतर से संपर्क होता है। शुद्ध, सात्विक, सांस्कृतिक

मनोरंजन होता है। ज्ञान-लाभ भी होता है। एक ही जगह समूचा धर्मप्राण भारत, उसकी कई पीढ़ियाँ और श्रेणियाँ दिख जाती हैं। युवा पीढ़ी प्रधान इस देश को धार्मिक मेलों, मंदिरों तथा तीर्थों से जोड़ देंगे तो वह पश्चिमीकरण से बची रहेगी, यानी भारतीय बनी रहेगी। मेले के कौतुकी दर्शन हेतु देश-विदेश ये यह युवा पीढ़ी प्रयाग पहुँचती है। उससे बहुत बड़े परिमाण में अर्थ-लाभ होता है—परिवहन को, होटल-रेस्त्राँ को, बाजार को और आश्रमों को। कर के माध्यम से सरकार को। बहुत बड़ा आय-स्रोत है यह धार्मिक पर्यटन। कुंभ के शुरुआती दौर में यहाँ दान-धर्म का सप्रयास प्रचलन किया गया था। सम्राट हर्षवर्धन यहाँ आकर अपना सर्वस्व लुटा देते थे। उनकी प्रेरणा से या उनकी देखा-देखी, यहाँ दानदाता बढ़ते गये और गरीब दानार्थी उमड़ते गये। आज भी वह क्रम जारी है। असन-वसन-सेवा, सब प्रायः निःशुल्क। साम्यवाद का असली रूप दिखता है यहाँ।

एक पक्ष है प्रकृति-पर्यावरण का। गंगा-यमुना-सरस्वती की त्रिवेणी। गंगा की श्वेत धारा, यमुना की श्याम। सरस्वती अंतः सलिला हैं। कल्पना में लोग उसकी गुलाबी धारा को भी देख लेते हैं। तीनों पतित पावनी नदियाँ। चारों ओर बड़ा उन्मुक्त वातावरण। भाँति-भाँति के साइबेरियन पक्षी। सैलानियों को बड़ी नयनाभिराम लगती है कुंभ नगरी। उसका यह जगमगाता दृश्य। ये नदियाँ स्वच्छता-पवित्रता की प्रतीक हैं। इन दिनों उनकी निर्मल जल धाराओं को देखकर मन ललच उठता है, डुबकी लगाने को। लोग घण्टों नौका-विहार करते हैं, जल-क्रीड़ा करते हैं। समय पाकर कल्पवृक्ष के दर्शन करते हैं। ऐसी मान्यता है कि प्रलयांत में मात्र यही वट वृक्ष बच पाता है। यहीं से वट पत्र शायी प्रभु नव सृष्टि का शुभारंभ करते हैं। ब्रह्मा जी यहीं प्रथम यज्ञ करके इसे 'प्रयाग' बना देते हैं। यों, देश में लगभग डेढ़ दर्जन प्रयाग हैं। उनमें इस तीर्थराज को प्रयागराज कहा जाता है। ऐसी आस्था है कि इस बीच सारे तीर्थ यहीं एकत्र हो जाते हैं। खगोल के कई ग्रह इस बीच परस्पर जुड़ जाते हैं। सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं। सर्दी का उभार कम होने लगता है। बड़ी राहत मिलती रही होगी, उन भारतवासियों को, जिनके पास शीत से जूझने के लिये तब आज जैसे संसाधन नहीं थे। कुंभ में नहाकर ओर होली तापकर वे शीत मुक्त हो जाते थे। इतना महत्व है कुंभ का, विशेषतः 144 वर्ष बाद आने वाले महाकुंभ का, जो जीवन में केवल एक बार ही मिल सकता है।

●

आवरण कथा-2

# Chola Dynasty's Temple Economy

**- Aadrika Shukla**

***One of south India's longest-ruling dynasties, the Cholas, made significant contributions to Tamil Nadu's economy and culture, with their temples playing a key role.***

The ninth century CE, the mighty Cholas built a formidable empire in Thanjavur and its vicinity. They ruled for four and a half centuries, achieving enormous success in all aspects of royal endeavor including military conquest, effective administration and cultural integration. During their reign, in the eleventh and twelfth century, these rulers built three magnificent temple structures which were later given the title of 'The Great Living Chola Temples' and were also declared a UNESCO world heritage site.The temple's daily, weekly, and yearly worship rituals, which date back over a thousand years and are based on far older Agamic literature, are still an inseparable part of the people's life. These three temple complexes together form a unique ensemble, and through their acclaimed architecture and art, embody a distinct period of the Chola history and culture. These very temples, as well as other temple constructions, served as massive socio-economic centers that had a tremendous influence on the Chola economy.

In medieval South India, temples were erected as acts of devotion, to celebrate great triumphs, to remember the dead, and, most of all, to fulfill the wants of the people. A temple was a center of study, art, and social activities in addition to being a religious center. It needed to hire a lot of people to carry out its varied duties. As an employer, it set a high standard in public life, as shown by several inscriptions on various temples' walls. The temple established suitable criteria for working in different roles and took great care in the welfare of its employees by providing clothes,

food, and housing, as well as organizing proper education and creating hospitals to care for the ill and crippled.

Apart from such administrative positions, the temple employed many musicians, singers, gardeners, artisans, dancing girls as well as other personnel that took care of the temple premises. Teachers and scholars were also employed by the temples, which had schools and colleges linked to it. Regular patrols to keep an eye on the temple's properties were also a part of their jobs.

***The temple's daily, weekly, and yearly worship rituals, which date back over a thousand years and are based on far older Agamic literature, are still an inseparable part of the people's life.***

The number of employees at the temple varied depending on the temple's prominence. Payments for temple work were mostly in grains, with a fixed amount set before the work that sometimes fluctuated depending on the crop growth. Some workers, such as the chef, watchmen, and others were also given a daily ration of rice, curries, ghee, and other foods. Lands given to the temple for production of the aforementioned crops were managed by tenants who also took the responsibility of distribution of these crops to the employees. Additionally, the temple took great care to build adequate accommodation for its servants, as evidenced by a number of references in templescriptures.So, by means of employment, the temples incorporated the people of the Chola dynasty into everything that they stood for- academia, artwork and other social and religious pursuits.

The temples played a key role in the sphere of irrigation for agricultural expansions too. The epigraphs show that several villages were given to temples as devadana. However, it appears that a lot of these settlements lacked irrigation. In some situations, the temples-built tanks and other irrigation infrastructure on their own dime in order to increase agriculture inside their control region. Though temples were affluent and contributed to irrigation and reclamation projects to benefit the villages, they frequently

encouraged others to participate in these endeavors as well. Individuals were given tax-free lands as an incentive.

Villages frequently had leaks in irrigation tanks, and as a result, agriculturists left their cultivated areas fallow for lengthy periods of time owing to a lack of cash. In such circumstances, temple administrators frequently lent a helping hand to the residents by selling temple-owned property to repair the village tanks' breaches. Temples also actively participated in reclaiming forest or waste lands too. Irrigational work to put the area under effective agriculture, and leasing the fields to farmers, according to inscriptional evidence. The excellent tenancy terms offered by the temples also drew cultivators in. The growers reaped significant benefits from the capital investment, which was mostly used for labor services in the building of irrigation canals.

***The number of employees at the temple varied depending on the temple's prominence. Payments for temple work were mostly in grains, with a fixed amount set before the work that sometimes fluctuated depending on the crop growth.***

But what is it that enabled these temples to carry out such huge functions the way they did? The Chola rulers were extremely passionate about temple construction, seeing them as not just places of worship but also economic hubs of their kingdoms. The temples' economic prominence was due to the many grants it received. Important events like the establishment of a dynasty, the crown prince's coronation, or the royal military expedition either prompted the construction of a new temple or brought improvements to old ones. Local events were also remembered by special donations to the temple, such as a king's visit to select villages, special gatherings of the municipal assembly, or seasonal celebrations in the area. Owing to these massive endowments, which were usually in the form of land, gold, and money, the temples became the richest institution in ancient civilization due to the massive endowments.

Other than that, the temples were entitled to a number of economic benefits as a result of their privileges. They were the first to stake a claim to irrigation water, the cattle of the temple were free to graze on certain lands, and in certain communities, the temple was even given permission to accept the property of individuals who died without sons, as well as property which was left unclaimed. The large quantity of money equipped the medieval temples to serve as banking institutions, which is also how they aided the agrarian culture of the period. The donations that the medieval temples received were of a philanthropic character, they were mostly created with a specific purpose in mind. The temples had no authority to utilize the funds for anything other than the donor's intended purpose. As a result, the temples lend the money to the society with interest. In most cases, the temple grants the loans on the condition that the interest be paid to the temple in cash or that certain objects be provided to the temple in exchange for the interest. This interest helped the temples achieve their objective.

***The Chola rulers were extremely passionate about temple construction, seeing them as not just places of worship but also economic hubs of their kingdoms.***

Temples were a major social and economic force throughout the Chola period. As we can see, they did not only service the people's spiritual needs, but also played an essential role in their daily lives. In many ways the temples used their upper hand to carry out a multitude of beneficial development operations for society, either directly or indirectly. Though the temples gave money to assemblies and people at interest, their fiscal assistance to the community was seen as particularly unique in terms of the society's socio-economic aspects. To this date, these temples continue to have a large impact on their socio-economic surroundings.

•

# भाषा शब्द और विचार

**- विनीता मिश्रा**

भाषा और शब्द यह सब माध्यम है विचार को प्रकट करने के, साझा करने के; सोचिए यदि विचार ही ना हो तो शब्द और भाषा सब बेमानी हो जाएंगे अथवा इन की कोई जरूरत ही नहीं रह जाएगी तो महत्वपूर्ण कौन है भाषा या विचार? निश्चित ही विचार, विचार जो जन्मता है मौन से और विस्तार पाता है मौन से। विचार के जनक हैं मौन और शांति। वह किसी भाषा-शब्द-व्याकरण का मोहताज नहीं, वह निरंतर उपजता रहता है, चलता रहता है, बहता रहता है...। उसे दूसरों तक संप्रेषित करने के लिए हमें सहारा लेना पड़ता है भाषा का, शब्दों का। पर आज हम इन शब्दों के जाल में इतनी उलझ गए हैं कि निरंतर इन शब्दों की लहरों में निरुद्देश्य बहे चले जा रहे हैं बिना किसी सोच विचार के।

इन शब्दों के झंझावत ने हमें स्वयं में इस कदर उलझा लिया है कि यह वार्ता संप्रेषण का माध्यम एक शोर का रूप ले चुका है। शब्द जिस प्रकार हमें संसार से जोड़ता है उसी प्रकार मौन हमें स्वयं से जोड़ता है। मौन की भाषा वह भाषा है जो सिर्फ विचार पर चलती है, उसी पर निर्भर है अतः यह सर्वश्रेष्ठ भाषा है और श्रेष्ठतम माध्यम है स्वयं से मिलने का। भाषा निबद्ध हैः- शब्दों में, व्याकरण में और एक सीमा में बंध जाती है तो मौन मुक्त है, असीमित है, अनंत है। शब्द को यदि ब्रह्म माना गया है तो मौन उस ब्रह्म से भी पूर्व की स्थिति है; जहां से ब्रह्म एक विचारधारा के रूप में प्रकट होता है और एक शब्द की सीमा में आ ठहरता है जिसे ब्रह्म कहते हैं, यहीं से सृष्टि के सूक्ष्म रूप की शुरुआत' हो जाती है अर्थात शब्द रूप में। विचार : जो सृष्टि से परे है वह शब्द की सीमा पाते ही सीमित हो जाता है और प्रकृति का निर्माण करने लगता है परंतु मौन तो वह विस्तार है जो असीमित ही नहीं अनादि और अनंत भी है। हम कह सकते हैं कि शब्द यदि ब्रह्म है तो विचार ही उस ब्रह्म का जनक है। अतः इसको अनुभव अवश्य करें।

इसमें कोई मुश्किल नहीं है। कभी भी, कहीं भी एकांत में बैठ कर अभ्यास करें फिर यह आपके लिए कहीं भी सरल हो जाएगा। प्रारंभ में मौन बैठने से पूर्व कुछ पंक्तियां या कुछ पृष्ठ किसी भी सकारात्मक पुस्तक से पढ़ें जो आपको प्रिय हो और फिर आंख मूंदकर मौन की नौका में सवार होकर अपने मन सागर में छलांग लगा दीजिए। कम से कम 10 मिनट तो आप अपनी दिनचर्या से इस कार्य के लिए अवश्य निकालिए, यह आपको जो अनुभव कराएगा वह मैं यहां वर्णन नहीं

कर सकती क्योंकि मौन की इस यात्रा का वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। मौन को शब्द दे दिए तो वह आकार पा जाएगा पर मौन तो सदा ही निराकार रहा है। हां! इतना जरूर कह सकती हूं कि जो लोग कहते हैं उन से ध्यान नहीं लगता तो मैं अपना एक अनुभव यहां साझा करना चाहती हूं, बहुत पहले किसी ने मुझे सिखाया था ध्यान लगाया नहीं जाता वह तो एक प्रक्रिया है, वह कहीं न कहीं लगा ही रहता है। मैंने अनुभव किया कि इस लगे हुए ध्यान को मौन के द्वारास्वयं पर केंद्रित कर लो क्योंकि स्वयं से प्रिय तुम्हें कौन है और स्वयं से जुड़ना स्वयं को सोचना क्या मुश्किल है? स्वयं पर ध्यान केंद्रित होते ही स्वयं से एक वार्तालाप स्थापित हो जाता है। माना कि यह वार्तालाप भी शब्दों पर निर्भर होता है क्योंकि हमें इसी का अभ्यास है परंतु धीरे-धीरे यह वार्तालाप आपको वास्तविक मौन की ओर ले जाएगा, ले ही जाएगा क्योंकि यही प्रक्रिया है।

अंत में मैं एक बात के लिए विनम्र निवेदन करना चाहूंगी जैसाकि मैंने अभी ऊपर बताया कि हमें इसी का अभ्यास है तो क्यों ना हम बचपन से ही शब्दों के ज्ञान के साथ-साथ अपनी भावी पीढ़ी को, अपने नन्हे-मुन्ने बच्चों को इस मौन का भी अभ्यास करवाना आरंभ कर दें। मात्र 10 मिनट हम बच्चों को घर में ही रात में सोने से पहले यह अभ्यास प्रारंभ करवाएं जिसके परिणामस्वरूप उनमें स्थिरता, आत्मविश्वास और शांति के सुख का अनुभव करना आ पाएगा और जीवन में आगे शायद निराशा, हताशा, अवसाद, अधीरता, अशांति, बेचैनी, यहां तक कि मधुमेह, रक्तचाप, हृदय संबंधी बीमारियां और मानसिक उलझन और जैसी समस्याओं से जूझ सकेंगे और एक सुंदर-शांत, सफल मनुष्य जीवन का आनंद उठा सकेंगे।

गीता के इस श्लोक के साथ अपनी बात को यहीं विराम देती हूं:

**श्रुतिविप्रतिपन्नाते यदास्थास्यति निश्चला।**
**समाधावचलाबुद्धिस्तदा योगमवापस्यसि।।**

(श्रीम्भगवद्गीता, द्वितीय अध्याय, श्लोक 53)

अर्थात "वेदों में वर्णित सुंदर भाषा के द्वारा कर्मफल प्रभाव से मोहित हुए बिना मन को शांति स्थिरता को प्राप्त करो, इस प्रकार आत्म साक्षात्कार के द्वारा दिव्य चेतना को स्वयं में झांक सकोगे।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि गीता भी हमें भाषाबद्ध वेद से ऊपर मन की शांति के द्वारा अर्थात मौन के द्वारा ही स्वयं को अनुभव करने का मार्ग बताती है।

।। ॐ शांति।।

# चिरयौवना अयोध्या

चिरयौवना अयोध्या की अधिष्ठात्री देवी अयोध्या को प्रणाम कीजिए!

आप पूछ सकते हैं यह क्या? तो जानिए कि ऐश्वर्य में जगमग और भक्ति में लिपटी राम की नगरी अयोध्या के नामकरण की कथा बहुत दिलचस्प और रोमांचक है। यह दिलचस्प कथा न वाल्मीकि बताते हैं, न तुलसीदास, न भवभूति आदि। बताते हैं, कालिदास। रघुवंशम् में कालिदास रघुवंश की कथा तो बांचते ही हैं, अयोध्या नगर के बसने की भी बहुत दिलचस्प कथा बांचते हैं। बताते हैं कि अयोध्या एक स्त्री है, जिसके नाम पर अयोध्या नगर बसा है।

अभी भी जो अयोध्या हमारे सामने उपस्थित है, कम से कम राम की बसाई अयोध्या नहीं है। यह बात भी लोगों को अच्छी तरह जान लेना चाहिए। जान लेना चाहिए कि राम की बसाई अयोध्या उजड़ गई थी। बहुत बाद में इसे अयोध्या के कहने से ही फिर से राम के पुत्र कुश ने बसाया। राम की नगरी अयोध्या कैसे बसी, कितनी बार उजड़ी, यह तथ्य भी कितने लोग जानते हैं? लेकिन अयोध्या के उजड़ने और बसने के तमाम विवाद पर हम अभी यहां कोई चर्चा नहीं करना चाहते। क्योंकि राम एक सकारात्मक और मर्यादित चरित्र हैं। तुलसीदास इसीलिए राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं। इसी रूप में वह राम को स्थापित करते हैं। मत भूलिए कि जन-जन और जग में आज राम इस तरह उपस्थित हैं, लोक जीवन में उनका डंका बजता है तो इसका एक महत्वपूर्ण कारण तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस है। लेकिन यहां हम अयोध्या नगर के बारे में कालिदास का बताया किस्सा, संक्षेप में याद करते हैं। जो बहुत कम लोग जानते हैं। कालिदास तो वर्णन के कवि हैं। एक-एक बात के लिए, जरा-जरा सी बात के लिए ढेर सारे श्लोक लिख डालते हैं। बारीक से बारीक विवरण प्रस्तुत करते हैं। करते ही जाते हैं। रेशा-रेशा खोलते जाते हैं।

अयोध्या है कौन जिस के नाम पर यह नगर अयोध्या बसा। नहीं जानते तो पढ़िए कभी कालिदास लिखित रघुवंशम्। तो पता चलेगा कि अयोध्या एक स्त्री का नाम है। अयोध्या इस नगर की अधिष्ठात्री देवी भी कही जाती हैं। इस स्त्री अयोध्या के नाम पर ही अयोध्या नगर बसा। रघुवंशम् के मुताबिक अयोध्या चिरयौवना थी। इंद्र का वरदान था कि वह कभी बूढ़ी नहीं होगी। सर्वदा जवान रहेगी। सदियों-सदियों जवान रहेगी। आप खुद देखिए कि आज फिर अयोध्या

सब से ज्यादा जवान होने की ओर अग्रसर है। अयोध्या का वैभव फिर लौट रहा है।

इक्ष्वाकु वंश के महाराज दिलीप संतान सुख से वंचित थे। एक ऋषि से वह मिले और संतान सुख से वंचित होने की तकलीफ बताई। उस ऋषि ने उन से कहा कि बागेश्वर से सरयू नदी निकलती है। उस से इतनी दूरी पर इस नदी में सपत्नीक स्नान कर पूजा-पाठ करें, संतान प्राप्ति होगी। राजा दिलीप को उस ऋषि ने बताया था कि जहां भी कहीं जाइएगा, वहां एक स्त्री मिलेगी। वहीं अपना नगर बसा लीजिएगा। तो महाराज दिलीप एक दिन सरयू नदी में नहाकर निकले तो वह अयोध्या नाम की स्त्री मिली। पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है। तो उस ने बताया अयोध्या। दिलीप ने पूछा, कि कब से हो यहां? तो वह स्त्री बोली, दो लाख साल से यहीं हूं। महाराज दिलीप हंसे और बोले, इतनी तो तुम्हारी उम्र भीनहीं है। तो अयोध्या ने इंद्र के वरदान के बारे में बताया। और बताया कि इसीलिए वह चिरयौवना है। खैर महाराज दिलीप ने फिर यहां अयोध्या नाम से नगर बसाया। तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड में लिखा भी हैः

**अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ।।**
**जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरजू पावनि।।**

सरयू नदी उत्तराखंड बागेश्वर के पास से निकली बताई जाती है। उत्तराखंड के बागेश्वर से अयोध्या की दूरी कोई 500 किलोमीटर है। सरयू नदी को सर्वमैत्रे सभी कहा गया है। बौद्ध ग्रंथों में इसे सवेर नदी के नाम से दर्ज किया गया है। ऋग्वेद में भी सरयू का जिक्र है। बहरहाल महाराज दिलीप ने उस स्त्री के नाम से ही अयोध्या नगर बसाया और न्यायप्रिय शासन की स्थापना की। बहुत दिन बीत गए पर राजा दिलीप को संतान सुख नहीं मिला। तो वह मुनि वशिष्ठ के पास गए। मुनि वशिष्ठ ने बहुत विचार और गणना आदि के बाद महाराज दिलीप को बताया कि गऊ दोष है। गऊ की सेवा करें। संतान प्राप्ति होगी। महाराज दिलीप ने गऊ सेवा शुरू की। एक दिन अचानक एक शेर आया और नंदिनी गाय को शिकार बनाना चाहा। महाराज दिलीप शेर के सामने आकर खड़े हो गए, यह कहते हुए कि गऊ माता को नहीं मुझे अपना ग्रास बना लें। शेर ने रूप बदल लिया और कहा कि आप गऊ सेवा की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। हम आप की गऊ सेवा से प्रसन्न हैं।

कालिदास ने महाराज दिलीप के चरित्र का बहुत ही दिलचस्प वर्णन किया है, रघुवंशम में। बताया है कि वैवस्वत मनु के उज्जवल वंश में चंद्रमा जैसा सुख देने वाले दिलीप का जन्म हुआ।

महाराज दिलीप के चरित्र और व्यक्तित्व का बहुत ही दिलचस्प वर्णन कालिदास ने लिखा है। दिलीप को सारा सुख था पर उन की पत्नी सुदक्षिणा के कोई संतान नहीं थी। फिर गुरु वशिष्ठ के यहां जाने, कामधेनु का श्राप प्रसंग, नंदिनी गाय और शेर आदि की कई दिलचस्प कथाओं का वर्णन मिलता है। फिर एक पुत्र का जन्म होता है जिस का नाम रखा जाता है, दिलीप से प्रतापी भगीरथ पुत्र हुए। भगीरथ ही माँ गंगा को कठोर तप के बल पर पृथ्वी पर लाने में सफल हुए थे। भगीरथ के पुत्र ककुत्स्थ हुए और ककुत्स्थ के पुत्र रघु का जन्म हुआ। कालांतर में इसी रघु के पराक्रम के कारण इस वंश को रघुवंश नाम से जाना जाता है। फिर अज, दशरथ आदि के किस्से सभी जानते हैं। रघुकुल मर्यादा, सत्य, चरित्र, वचन पालन, त्याग, तप, ताप व शौर्य का प्रतीक रहा है। कोई 29 पीढ़ी की कथा मिलती है रघुवंश की जिसमें महाराज अग्निवर्ण अंतिम राजा बताए गए हैं। अग्निवर्ण की कोई संतान नहीं हुई। सो रघुवंश की यहीं इति मान ली गई है।

बीच में एक कथा फिर यह भी आती है कि राम ने जब भाइयों, पुत्रों के बीच सारा राज-पाट बांटकर जल समाधि ले ली तो बाद के समय में अयोध्या पूरी तरह उजड़ गई। तो अयोध्या नाम की वह स्त्री पहुंची कुश के पास। माना जाता है कि वर्तमान छत्तीसगढ़ में ही तब कुशावती कहिए, कुशावर्ती कहिए, कुश का शासन था। तो अयोध्या अचानक कुश के शयन कक्ष में पहुंच गई। कुश उसे देखते ही घबरा गए। बोले, तुम कैसे यहां आ गई। किसी ने रोका नहीं, तुम्हें? फिर वह प्रहरी आदि को बुलाने लगे।

तो अयोध्या ने कहा, घबराओ नहीं। किसी को मत बुलाओ। मैं अयोध्या हूं। मेरे युवा होने पर मत जाओ। तुम्हारे सभी पुरखों को जानती हूं। सभी मेरी गोद में खेले हैं। फिर अयोध्या ने इंद्र के वरदान के बारे में बताया। और बताया कि राम के बाद अयोध्या नगर उजड़ कर अनाथ हो गया है। जंगल हो गया है। अयोध्या में अब मनुष्य नहीं, जानवरों का वास हो गया है। सो तुम चलो और अयोध्या को फिर से बसाओ। कुश ने कहा कि लेकिन पिता राम ने तो मुझे यहां का राज-काज सौंपा है। अयोध्या कैसे चल सकता हूं। फिर अयोध्या ने जब कुश को

बहुत समझाया तो कुश मान गए। लौटे अयोध्या। उजड़ चुकी अयोध्या को फिर से बसाया। तो माना जाता है कि आज की अयोध्या कुश की बसाई हुई अयोध्या है। वैसे अयोध्या को पहला तीर्थ और धाम भी माना जाता है। कहा ही गया है:

**अयोध्या मथुरामायाकाशी काञ्चीअवन्तिका।**
**पुरी द्वारावतीचैव सप्तैतामोक्षदायिकाः।।**

अयोध्या जैनियों का भी तीर्थ है। 24 तीर्थंकरों में से 22 इक्ष्वाकुवंशी थे और उनमें से सबसे पहले तीर्थंकर। आदिनाथ (ऋषभ-देव जी) का और चार और तीर्थंकरों का जन्म यहीं हुआ था। बौद्धमत की तो कोशला जन्मभूमि ही है। शाक्य-मुनि की जन्मभूमि कपिलवस्तु और निर्वाण भूमि कुशीनगर दोनों कोशला में थे। अयोध्या में उन्होंने अपने धर्म की शिक्षा दी और वे सिद्धांत बनाए और दुनिया भर में मशहूर हुए। बहरहाल अयोध्या जिसे साकेत भी कहते हैं कि पौराणिक कहानियां और अन्य कहानियां बहुत सारी हैं। जिन का बहुत विस्तार यहां जरूरी नहीं है। पर अयोध्या की आज की कथा बांचने के लिए इतनी पौराणिक पृष्ठभूमि भी बहुत जरूरी है।

गरज यह कि अयोध्या सर्वदा ही उथल-पुथल की नगरी रही है। पौराणिकता तो जो है इस की वह है ही। पर एक समय बौद्धों का भी यहां बहुत प्रभाव था और जैनियों का भी। यही कारण है कि मुगलों ने अयोध्या पर हमला कर भारत के पौराणिक नगर में प्रभु राम के मंदिर को तोड़ कर मस्जिद बनाई और अपनी श्रेष्ठता और हनक कायम की। बाकी सैकड़ों बरसों का राम मंदिर विवाद सब के सामने है। विस्तार में जाने की जरूरत नहीं है। अब विवाद समाप्त है। आग बुझ चुकी है। पर विवाद की राख अभी भी उड़ती दिखती रहती है यदा-कदा।

राम के बाद अनाथ होकर उजड़ चुकी अयोध्या को जैसे कुश ने कभी दुबारा बसाया था, ठीक वैसे ही, मुगलों के आक्रमण के बाद, आजादी के बाद फिर से बरबाद हो रही अयोध्या और उस की अस्मिता को प्रतिष्ठित करने का काम फिर से बखूबी हो रहा है। लोग इस कार्य के लिए असहमत हो सकते हैं। विरोध कर सकते हैं पर ऐश्वर्य से परिपूर्ण अयोध्या को नई साज-सज्जा मिली है। नया रंग, नया रूप, नया कलेवर और नया तेवर दिया है। सुविधाजनक और सुंदर बनाया गया है। इस से कोई भला कैसे इंकार कर सकता है। अयोध्या अब जनपद है। वर्तमान का सच है।

याद आता है कि अखिलेश यादव का एक संदेश 2022 के उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव के दौरान सोशल मीडिया पर बहुत वायरल था कि सत्ता में आते ही वह अयोध्या को फिर से फैजाबाद कर देंगे। यह उन का अधिकार है। पर सत्ता में आए ही नहीं। आगे भी क्या आएंगे भला। खैर, सड़क से लगायत एयरपोर्ट तक विकास के कई स्तंभ लांघते हुए वर्डक्लास नगर बनने की ओर अग्रसर है अयोध्या। सिर्फ रामनगरी और भव्य राम मंदिर ही नहीं, पर्यटन का एक बड़ा केंद्र बन कर हमारे सामने अयोध्या नगर उपस्थित है। अयोध्या का चतुर्दिक विकास देखते हुए कई बार मन में प्रश्न उठता है कि आने वाले दिनों में अयोध्या कहीं राजनीतिक राजधानी तो नहीं बन जाएगी।

सांस्कृतिक राजधानी तो वह बन ही गई है। दुनिया भर से लोग वहां अब उपस्थित हैं। देश भर से जनता-जनार्दन उपस्थित है। लोग इतने आ रहे हैं कि वाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हवाई जहाज के लिए पार्किंग की जगह नहीं मिल रही है तो आस-पास के तमाम हवाई अड्डों पर हवाई जहाज की पार्किंग के लिए जगह आवंटित की गई है। देहरादून, जयपुर, आगरा, वाराणसी, लखनऊ, गोरखपुर आदि हवाई अड्डे पर। फिर भी जगह कम पड़ रही है। कई शहरों से हेलीकाप्टर सेवा अलग है। अयोध्या धाम जैसा शानदार और सुविधा वाला रेलवे स्टेशन पूरे भारत में नहीं है। इस रेलवे स्टेशन के आगे तमाम हवाई अड्डे फेल हैं।

इसीलिए पुनः कहता हूं कि ऐश्वर्य में जगमग और भक्ति में लिपटी राम की नगरी चिरयौवना अयोध्या की अधिष्ठात्री देवी अयोध्या को प्रणाम कीजिए**!**

*(इंटरनेट से साभार)*

•

# शंकर गेस्ट हाउस

ए.सी. एवं नान ए.सी. कमरे उपलब्ध हैं

प्लाट नं0 5, सरस्वती पुरम, निकट पी.जी. आई.
रायबरेली रोड, लखनऊ

सुशील दीक्षित
योगेश कुमार
पंकज

कहानी

# कर्ज

– डॉ. अमिता दुबे

'आपको जीवन साथी की तलाश शुरू कर देनी चाहिए पापा।' अवन्तिका ने नाटकीय अन्दाज में कहा- 'अभी इतना लम्बा जीवन कैसे कटेगा अकेले।'

'तुम्हारे सहारे बेटा।' गगन की आवाज जैसे कुएँ से आ रही थी।

'पर पापा मेरा क्या सहारा? मैं तो एम.बी.ए. करने कैलीफोर्निया जा रही थी। बीच में मम्मा बीमार हो गयीं, मैंने तो एण्टरेंस टैस्ट भी क्वालीफाई कर लिया था। उस समय आप मम्मा की वजह से बहुत परेशान थे इसलिए मैंने बताया नहीं। कल ही मेल आयी है अभी मेरी सीट भरी नहीं है। मुझे पढ़ने का मौका मिल सकता है कुछ लेट फीस के साथ।' अवन्तिका मुख्य मुद्दे पर आ गयी।

गगन ने पत्नी गरिमा के चित्र की ओर देखकर कहा- 'तुम्हें जाना है तो जाओ अवि। मेरी चिन्ता मत करो। मैं अकेला कहाँ हूँ तुम्हारी मम्मी की यादें हैं मेरे साथ। मेरा व्यवसाय है, मेरे सहयोगी हैं और सबसे बढ़कर आदिल है, मेरा बचपन का साथी मेरा यार!' गगन ने सामने से आते हुए आदिल को देखकर कहा।

आदिल ने अदब से सिर हिलाया और गले में पड़े गमछे से आँसुओं को पोंछा जो मालकिन गरिमा भाभी की याद में अनायास निकल आये थे। जब से भाभी अल्लाह को प्यारी हुई हैं तब से घर वीराना हो गया है। भाभी की हँसी पूरे घर को गुलजार करती थी। बात-बात पर चुटकुले सुनाकर ठहाके लगाना उनकी आदत थी।

बिटिया अवि और गगन भइया तो घर में कम ही रहते थे। भाभी का ज्यादातर वक्त आदिल के साथ बीतता था। इसलिए सबसे अकेला तो आदिल ही हुआ था। आदिल ने भाभी की तस्वीर को देखकर ठण्डी आह भरी।

'वाह! रे परवरदिगार! तेरी कैसी रजा है। भाभी की उमर ही क्या थी ? अभी तो इन आँखों ने उनकी डोली देखी थी, मइय्यत भी देखने की गुनहगार हो गयीं ये आँखें।' गगन के टोकने पर आदिल ने अवन्तिका से कहा- 'बिटिया रानी! आपको जहाँ भी जाना हो जाइये हम अपने मालिक का साथ नहीं छोड़ने वाले।'

वह तो ठीक है अंकल लेकिन मैं हमेशा तो इस घर में रहने वाली नहीं। पहले पढ़ाई पूरी करूँगी, नौकरी करूँगी, फिर शादी भी होगी। तब पापा अकेले कैसे रहेंगे।' अवन्तिका ने बात खत्म करने से पहले दांतों के बीच चीभ दबा ली। उसे

लगा अभी शादी की बात नहीं करनी चाहिए थी। पापा क्या सोच रहे होंगे। मम्मी को गये अभी एक महीना भी नहीं बीता है और उसे शादी की पड़ी है।

गगन ने सोचा- 'कितनी उतावली पीढ़ी है। अपने कैरियर की दीवानी अवन्तिका उल्टा-सीधा कुछ भी बोले जा रही है। यह नहीं जानती कि गरिमा की बीमारी में काफी जमा पूँजी खर्च हो चुकी है। कैलीफोर्निया जाने में 20-25 लाख का खर्च आना तो मामूली बात है। घर को गिरवीं रखकर पैसा तो मिल सकता है लेकिन कर्ज चुकाने के लिए लड़खड़ाते व्यवसाय को वह अकेले कैसे सम्हालेगा। अभी तक गरिमा थी तो ऑफिस का काम वह ठीक तरह से देख लेती थी। ऑडर आदि लाने के लिए उसे महीने में पन्द्रह दिन बाहर भटकना पड़ता था तब गरिमा की कार्य-कुशलता देखते ही बनती थी। उसके पिता का खड़ा किया हुआ यह व्यवसाय अपने उत्तराधिकारी को ढूँढ़ रहा है।' गगन की आँख भर आयी।

'पापा**!** बी प्रैक्टिकल' अवन्तिका ने गगन के आँसू देखकर कहा। 'रोने से मम्मा वापस तो नहीं आ सकतीं। हमें उनका सब्स्टीट्यूट ढूँढ़ना होगा।' अवन्तिका घाव पर घाव दिये जा रही थी।

'गरिमा का कोई विकल्प हो सकता है भला। गरिमा तो गरिमा थी। उसके पापा उसे 'प्रिंसेज' कहते थे। वह थी भी राजकुमारी की तरह। एकदम नाजुक, सुन्दर और आकर्षक। हमेशा हँसती रहती। जब गगन उदास होता तो कहती- 'मित्र**!** उदास मत हो, जिन्दगी चार दिन की है जी भर जिओ गम को पियो, मस्ती करो और सब कुछ भगवान पर छोड़ दो।'

अनजाने में गगन के मुँह से निकला- 'सब कुछ भगवान पर छोड़ दो अवि**!** तुम अपना काम करो, वह अपना काम करेगा। कोई रास्ता दिखायेगा।'

'पापा आप बैठे रहो भगवान के भरोसे, मैं तो चली। पैसे का इंतजाम कर दो, मुझे पन्द्रह दिन में जाना है। कुछ फॉरमेल्टी पूरी करनी है फिर उड़ जाऊँगी।'

अवन्तिका बिल्कुल भावुक नहीं थी। उसने पूरी योजना बना रखी थी। उसका मित्र प्रखर पहले ही जा चुका था। उसने ही कोशिश कर उसकी सीट रुकवायी थी। अवन्तिका ने सोचा, इस समय अगर कमजोर पड़ी तो जिन्दगी बहुत पीछे छूट जायेगी। प्रखर के पापा की एक ही शर्त थी लड़की प्रखर की तरह एम.बी.ए. हो किसी भी जाति-बिरादरी की हो चलेगी लेकिन पढ़ाई से समझौता नहीं। मम्मी के मरने पर प्रखर नहीं आ सका था। उसका मैसेज आया था मोबाइल पर 'वेरी सैड, बट थिंक अबाउट फ्यूचर कम सून' इस सन्देश के बाद अवन्तिका की दिशा बदल गयी थी। कल तक उसे लगता था पापा अकेले हो गये हैं वह

उन्हें छोड़कर कैसे जायेगी पता नहीं पापा कैसे रहेंगे उसके और मम्मी के बिना। लेकिन प्रखर उसका भविष्य था पापा से अलग सुनहरा भविष्य।

आदिल ने टोका- 'क्या कह रही हो बिटिया? अभी तो भाभीजान की चिता भी ठण्डी नहीं हुई और तुम जाने की बात करने लगी। यह भी नहीं पूछा- पापा! तुम्हारे पास कुछ बचा भी है या नहीं।'

'बचा क्यों नहीं होगा। मेरे नाना का इतना बड़ा बिजनेस है और आप कह रहे हैं कुछ बचा भी है?'

'तुम्हारी मम्मी के इलाज में बहुत खर्च हुआ।' गगन ने कहा।

'तो समुद्र से कुछ बूँदें या पानी की बाल्टियाँ भी निकाल ली जायें तो क्या समुद्र का पानी कम होता है। डैडी लगता है आपने बिजनेस पर ध्यान नहीं दिया। मम्मी तो केवल छः महीने बीमार रहीं। बिजनेस तो तीस बरस पुराना है और आपके पास पिछले पन्द्रह बरसों से है जब से नाना गुजर गये। नहीं तो नाना ही सब देखते थे।' अवन्तिका गगन को याद दिला रही थी कि अब वह इस बिजनेस की मालकिन है।

गरिमा अपने पिता की इकलौती सन्तान थी। गगन से शादी होने के बाद भी वह अपने पापा का हाथ बँटाने ऑफिस जाती रही थी। गगन अपनी नौकरी के सिलसिले में जब कभी बाहर जाता तो गरिमा अपने पापा के पास रुक जाती। अवन्तिका तो स्कूल से सीधा गरिमा के पास ऑफिस ही चली जाती। देर शाम को दोनों घर लौटतीं। कभी-कभी ज्यादा थके होने पर गरिमा होटल से खाना पैक करवा लाती थी और तीनों खाकर आराम करते अगले दिन की तैयारी में।

गरिमा के पापा को पैरालिसिस का अटैक पड़ा। उन्होंने गगन से बिजनेस में हाथ बँटाने का आग्रह किया। गगन टाल गया। उनकी हालत दिनों-दिन बिगड़ने लगी। पुराने कर्मचारी गरिमा को सहारा देने के बजाय चकमा देने लगे। ऐसे में गगन को नौकरी छोड़कर गरिमा का साथ देना पड़ा। गरिमा के पापा अपाहिज बन पाँच वर्ष बिस्तर पर पड़े रहे। गगन-गरिमा को अपना घर छोड़कर उनकी देखभाल के लिए उनके साथ रहना पड़ा। एक दिन वकील बुलाकर गरिमा के पिता ने एक वसीयत की। उनके मरने के बाद उनकी चल-अचल सम्पत्ति गरिमा की। और उसके बाद अवन्तिका की। गगन कहीं बीच में नहीं था। गरिमा तो राजकुमारी थी अपने पापा की लेकिन अवन्तिका तो नाना की महारानी थी। धीरे-धीरे उसके अधिकार की भावना बढ़ती गयी। उसकी जायज व नाजायज माँगें पूरी होती गयीं और वह मुँहफट, चिड़चिड़ी और बदतमीज होती चली गयी।

नाना के बाद गरिमा ने उसे सुधारने की कोशिश की तो उसने हॉस्टल में रहने की जिद ठान ली। गरिमा के पूछने पर कि 'एक ही शहर में हॉस्टल में रहने का क्या मतलब?' तो बड़ी बदतमीजी से बोली- 'पढ़ाई हॉस्टल में ही हो सकती है। आप कहो तो अमेरिका, इंग्लैण्ड चली जाऊँ। बैंक खाते में पैसा डाल दो बस।' गरिमा सन्न रह गयी थी। उसने बड़े दुःख से गगन से कहा था- 'गगन यह बेटी नहीं मेरी दुश्मन है। देखना हमारा चैन कैसे नष्ट करेगी।'

गगन ने उस समय कुछ नहीं कहा था बस गरिमा का कंधा थपथपा कर रह गया था। आज वही अवन्तिका उसे जीवन साथी की तलाश करने का सुझाव देकर पूरे बिजनेस का मानो हिसाब माँग रही थी। पैर पटक कर घर से बाहर जाती बेटी को देखकर गगन ने एक निर्णय लिया। गरिमा की सम्पत्ति से अलग होने का निर्णय। यह सम्पत्ति उसकी पत्नी की थी। गरिमा ने तो बहुत बार कहा- 'गगन! कम्पनी के शेयर मैं तुम्हारे नाम कर देती हूँ। अवन्तिका के तेवर तो अभी से ठीक नहीं हैं।'

गगन ने हँस कर कहा था- 'तुम्हारे तेवर तो ठीक हैं। पति-पत्नी का कहीं कुछ बँटा होता है। मुझे अवन्तिका से क्या लेना-देना। मैं तुमसे उम्र में बड़ा हूँ तुमसे पहले जाऊँगा। तुम माँ बेटी निपटती रहना आपस में।'

गरिमा ने तुनक कर कहा था- 'देख लेना तुम देखते रह जाओगे और मैं यूँ उड़ जाऊँगी।' उसने हवाई जहाज के उड़ने का इशारा किया था। ठगा सा ही तो छोड़कर चली गयी थी गरिमा अचानक।

आदिल को याद आया, पापा जी के बीमार पड़ने के बाद गगन भइया ने घर को अस्पताल बना दिया था। एक डॉक्टर एक्सरसाइज कराने आता थ। उसने सुझाव पर सिरहाने से ऊपर उठने वाला पलंग खरीदा गया था। उससे पापा जी को लेटे-लेटे ही बैठा दिया जाता था। खाना वगैरह खिलाने में भी आराम हो गयी थी। पापा जी के बाद गगन भइया ने उस पलंग को पास के अस्पताल में दान देने को कहा तो भाभी ने कहा था- 'थोड़े दिन पड़ा रहने दो पापा की उपस्थिति का आभास करायेगा। फिर किसे पता भविष्य में जरूरत पड़ सकती है।'

'तुम बीमार नहीं पड़ सकतीं क्या?' भाभी भइया को चिढ़ा रहे थे किसे पता था माता सरस्वती जिह्वा पर विराजमान हो गयी थीं गरिमा की। लेकिन उसके बाद वह कमरा ज्यों का त्यों बंद कर दिया गया था पापा जी के कुछ सामानों के साथ। कभी-कभार भाभी अपने सामने कमरे को खुलवाकर सफाई करवातीं और हर एक चीज को छू-छूकर देखतीं, मानो पिता को अनुभव कर रही हों, सहला रही हों।

ठीक ऐसे ही गगन भइया आज करने आये हैं उस कमरे में जहाँ पिछले छः महीने भाभी लगातार रही हैं। अस्पताल में कैंसर का पता चलने पर घर लौटते हुए भाभी ने बेडरूम की जगह पापा जी के कमरे में रहने की इच्छा व्यक्त की थी। अगले दिन ही कमरे की साफ-सफाई करवा दी गयी थी वैसे भी आपरेशन के लिए मुम्बई जाने से पहले गरिमा भाभी एक-एक चीज को छू-छूकर देख गयी थीं।

इतनी तकलीफ में भी भाभी हँसती-मुसकुराती रहती थीं। एक नर्स चौबीस घण्टे उनके पास रहती थी। उसके सधे हाथों और खिंचे चेहरे के बीच वे सामंजस्य खोजते हुए अक्सर कहती थीं- 'सिस्टर कामना! आपकी कौन सी कामना अधूरी रह गयी जो इतना परेशान दिखती हो।' फिर खुद ही कहतीं- 'वैसे किसी अनजान व्यक्ति का ऐसा-वैसा सारा काम करना कोई आसान बात तो है नहीं।'

कामना कहती- 'नहीं मैम! हमारी ट्रेनिंग में सिखाया जाता है कि मरीज के आराम का ध्यान रखो। फालतू बातचीत मरीज को परेशान कर सकती है।'

'बातचीत से किस कमबख्त को परेशानी होती है। न जाने कितनी साँसों की मोहलत मिली है, कम से कम हँस-बोल तो लूँ। फिर तो यह संसार छूट ही जायगा।'

कमरे के बाहर खड़े आदिल और गगन रो पड़ते। अवन्तिका कहती- 'मम्मा तुम कहाँ जा रही हो। चुपचाप दवा खाओ और सो जाओ, बहुत जल्दी चंगी हो जाओगी।'

हॉस्टल में रहने वाली बेटी कितनी बदली-बदली लगने लगी थी गगन को। वही अवन्तिका आज गगन को कटघरे में खड़ा कर रही थी। गगन ने अवन्तिका की इच्छा के अनुसार मकान के कागज बैंक में गिरवी रखकर उसके 'एजूकेशनल लोन' की व्यवस्था कर दी थी। इस शर्त के साथ कि यदि अवन्तिका इस कर्ज को नहीं चुकाती है तो बैंक को अधिकार होगा कि वह इस घर को नीलाम कर दे या अपना कर्ज वसूल करने के लिए चाहे कुछ भी करे। गगन का कोई लेना-देना इस 'डील' में नहीं था।

उसे तो गरिमा के प्यार-विश्वास के कर्ज को चुकाना था। बिना टूटे-बिना रोये बिना कुछ खोये गरिमा की स्मृतियों को संजोने का प्रयास करना था। गरिमा कहती थी- 'एक ही बेटी है गगन! वह ससुराल चली जायेगी। हम बुड्ढा-बुढ़िया ऋषिकेश चलेंगे। जहाँ गंगा जी के किनारे एक फ्लैट लेंगे और रात दिन गंगा जी को निहारेंगे। देखो ऐसा घर लेना जिसकी खिड़की से गंगा जी दिखायी दें। निर्मल-निर्मल गंगा जी, कलकल करती गंगा जी।'

सचमुच इसी सपने को साकार करने चला है गगन। उसने आदिल को अपने गाँव लौट जाने के लिए बहुत कहा लेकिन वह नहीं माना। साथ रहने की जिद करता है पगला। नहीं जानता कब किसका साथ छूट जाये कौन कहाँ बिछुड़ जाय। कौन भीड़ में अकेला हो जाय। अभी दस वर्ष बहुत सारा काम किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति की उम्र 60 वर्ष होती है वह तो अभी 51 का ही है। गरिमा के सपने को साकार करने के लिए उसने दोबारा नौकरी करने का मन बनाया है। बस उसका निश्चय अपने जैसे एकाकी उम्र की ढलान की ओर बढ़ने वालों को एक आसरा देने के लिए 'गरिमा कुटीर' बनाने का है। आदिल भी तो उसी के साथ बूढ़ा होने वाला है धीरे-धीरे।

प्रधान सम्पादक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, 6, महात्मा गाँधी मार्ग,
हजरतगंज, लखनऊ-226001 मो.: 9415551878

•

# भला आदमी क्या कर लेगा?

**– डी सी अवस्थी**

चाहे जितना उसे सताओ, भला आदमी क्या कर लेगा।
चाहे जितना मूर्ख बनाओ, भला आदमी क्या कर लेगा।

बात बताता हूँ मैं पक्की, मज़बूती से गाँठ बाँध लो,
उससे सारे काम कराओ, भला आदमी क्या कर लेगा।

कलियुग का है समय चल रहा, नीति-धर्म की बातें छोड़ों,
वादा करके नहीं निभाओ, भला आदमी क्या कर लेगा।

कहे काम तो बना बहाने, पिछली सारी बातें भूलो,
फिर उसकी गलती बतलाओ, भला आदमी क्या कर लेगा।

भला मिले अफ़सर यदि तुमको, तो पौ बारह अपने समझो,
जब चाहो तब दफ़्तर जाओ, भला आदमी क्या कर लेगा।

ले लो कर्ज़ मिले यदि उससे, लौटाने की बात न सोचो,
खा-पी करके मौज मनाओ, भला आदमी क्या कर लेगा।

दुष्टों से तुम कभी न भिड़ना, वरना वे टाँगें तोड़ेंगे,
भले मानुषों को दहलाओ, भला आदमी क्या कर लेगा।

# प्रचार की शक्ति अथवा पॉवर ऑफ नैरेटिव और कुमारिल भट्ट

– **तिलक शुक्ला**
रायबरेली

कहते हैं कि किसी झूठ को बार-बार दोहराने या व्यापक प्रचार होने पर लोग उसे सच मान लेते हैं।

यह लोगों का भोलापन है अथवा अज्ञानता या बहस का मुद्दा हो सकता है, पर यह किस्सा फिर कभी**!** इस तथ्य के उदाहरणस्वरूप एक अलग कथा पर चर्चा करते हैं-

यह कथा उस समय की है, जब बड़े से बड़ा वेदज्ञानी (ब्राह्मण) भिक्षा-वृत्ति से पेट भरता था। ब्राह्मण को एक दिन में भिक्षा हेतु केवल पाँच घरों से माँगने का निर्देश था। भिक्षुक को पाँच घरों से प्राप्त भिक्षा पर ही उस दिन निर्वाह करना होता था। यदि किसी दिन एक भी घर से भिक्षा न मिलने पर ब्राह्मण को सपरिवार भूखा रहना होता था। वहीं याचक को खाली हाथ लौटना गृहस्थ के लिये पापकारी माना जाता था।

ऐसे सामाजिक परिवेश में परम वेदज्ञानी कुमारिल भट्ट भिक्षा हेतु निकले। पहले ही घर की गृहिणी ने उन्हें छत से पुकार लगायी- "ब्रह्मन्, अपना झोला फैलायें ताकि मैं भिक्षा दे सकूं।" कुमारिल ने आश्चर्य से महिला से कहा- "देवी भिक्षा ऊपर से डालने में मेरी झोली से बिखर भी सकती है। कृपया भिक्षा नीचे आकर मेरी झोली में डालने की कृपा करें।"

इस पर महिला भयभीत होते हुये बोली- "सन्यासी, आप प्रसन्न हों**!** मैं नीचे नहीं आ सकती। यदि नीचे आने पर मेरे कान में "बुद्धं शरणं गच्छामि" मन्त्र पड़ गया तो मैं बौद्ध हो जाऊँगी।"

बौद्धों की प्रचार शक्ति से कुमारिल चकित हो उठे। उन्होंने समाज में बौद्धों के भ्रामक प्रचार का समूल खंडन करने का निश्चय किया।

उन्हें ज्ञात हुआ कि बौद्ध आचार्य मीमांसा (तर्कशास्त्र) में बहुत निष्णात हैं। उनके तर्कों के आगे वैदिक आचार्य हतप्रभ हो निरुत्तर हो जाते थे। पराजित होने

पर शास्त्रार्थ के नियमानुसार पराजित वैदिक आचार्यों को बौद्ध धर्म में दीक्षित होना पड़ता था। देश से वैदिक परम्परा लगभग विलुप्त होने के कगार पर आ गयी थी।

बौद्धों के अपनी प्रखर तार्किकता और लगातार प्रचार से समाज में धारणा पैठ गयी कि कानों में 'बुद्धं शरणं गच्छामि' मन्त्र पड़ते ही वह स्त्री या पुरुष स्वतः बौद्ध हो जायेगा।

कुमारिल वैदिक ज्ञानी थे परन्तु उन्हें 'बौद्ध मीमांसा' के बारे में कोई ज्ञान नहीं था। अतः उन्होंने शास्त्रार्थ से पहले बौद्ध मीमांसा के बारे में सम्यक ज्ञान प्राप्त करने का निश्चय किया।

कुमारिल ने नालंदा में बौद्ध धर्म के सबसे बड़े आचार्यपाद 'धर्मकीर्ति' से दीक्षा लेकर बौद्ध धर्म में प्रवेश किया। उनसे बौद्ध मीमांसा के तर्क और बारीकियों को जाना और मनन कर उन तर्कों को आत्मसात किया। इस प्रकार बौद्ध मीमांसा में स्वयं निष्णात होकर उन्होंने वैदिक धर्म में 'घर-वापसी' की। कुमारिल ने तर्क शास्त्र में पारंगत होकर उन बौद्ध धर्म के शीर्ष आचार्य को शास्त्रार्थ हेतु आमंत्रित किया।

कई दिनों के अनवरत शास्त्रार्थ के बाद कुमारिल ने उन बौद्ध आचार्य को पराजित कर उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित कराया। इस घटना से जहां वैदिक धर्म को जीवनी मिली तो बौद्ध धर्म के प्रसार-प्रचार को बड़ा धक्का लगा। समस्त बौद्ध आचार्य कुमारिल के विरुद्ध हो गये। सामूहिक मंत्रणा के बाद बौद्धों ने कुमारिल पर गुरु-द्रोह का अभियोग प्रस्तुत किया। दोनों पक्षों के शीर्ष आचार्यों की महापंचायत बैठी।

इस महापंचायत में कुमारिल भट्ट ने अपना तर्क बड़ी विद्वता से प्रस्तुत किया। कुमारिल ने स्वीकार किया कि बौद्ध आचार्य कुमारिल के बौद्ध धर्म के गुरु अवश्य हैं। कुमारिल यदि बौद्ध धर्म के मतों पर उन गुरु का विरोध करते तब वे गुरु-द्रोह के अपराधी अवश्य होते। परन्तु कुमारिल ने वैदिक आचार्य के रूप में बौद्ध आचार्य से शास्त्रार्थ किया था। अतः वे गुरु-द्रोह के अपराध से पूर्णतया मुक्त हैं।

सारी उपस्थित मंडली कुमारिल के इस उत्तर से संतुष्ट थी। कुमारिल अपराध से मुक्त कर दिए गये। वैदिक धर्म एक बार फिर सनातन की मुख्य धारा बन गया।

परन्तु कुमारिल की अंतरात्मा ने कुमारिल को क्षमा नहीं किया। कुमारिल ने अपने अपराध (जिससे वे मुक्त हो चुके थे) का प्रायश्चित करने का संकल्प लिया। कुमारिल के शिष्यों ने रुंधे गले से कुमारिल को गुरु-द्रोह के अपराध के प्रायश्चित को स्मृति से पढ़ कर सुनाया। स्मृति में गुरुद्रोही के लिए धान की जलती भूसी के बीच प्राणाहुति की व्यवस्था थी।

शिष्यों व समकालीन वेदाचार्यों के मना करने के बावजूद कुमारिल ने गुरुद्रोह के प्रायश्चित के स्वीकार कर प्राणाहुति को प्रस्तुत हो गए।

ध्यातव्य है कि धान की भूसी बहुत धीरे-धीरे सुलगती है। प्राणाहुति देने वाला कुम्हार के आंवे में पकते हुये मृदा पात्रों के समान तपते हुये धीरे-धीरे प्राण त्यागता है। ऐसा था भयानक गुरु-द्रोह का प्रायश्चित। आचार्य कुमारिल भट्ट इस व्यवस्था को अंगीकृत कर अमर हो गए।

कहते हैं कि ठीक इसी समय दक्षिण का एक किशोर ब्रह्मचारी शास्त्रार्थ में सभी विद्वानों को पराजित करता हुआ वहां पहुंचा। शंकर ने प्रायश्चित हेतु सुलगते धान की भूसी के बीच प्राणाहुति हेतु बैठे कुमारिल से शास्त्रार्थ की याचना की। यह किशोर सन्यासी अद्वैतवादी 'शंकर' था जो कुमारिल से शास्त्रार्थ के निमित्त सुदूर दक्षिण भारत से काशी पैदल चल कर आया था।

कुमारिल ने निर्विकार भाव से 'शंकर' को आश्वस्त करते हुये कहा- "मेरी यात्रा तो अब रुक नहीं सकती। अतः हे ज्ञानी सन्यासी**!** तुम मेरे शिष्य मंडन मिश्र से शास्त्रार्थ करो। मंडन मेरे ही समान विद्वान है। यदि तुम उसे पराजित कर सको तो समझना मैं भी तुमसे पराजित हो गया।" कह कर कुमारिल अपने प्रायश्चित निष्पादन में लीन हो गये।

अद्भुत थे वे लोग**!** अद्भुत थी उनकी निष्ठा**!**

तर्क और प्रचार शक्ति से फैली भ्रान्ति को निर्मूल करने और अपने धर्म की रक्षा हेतु दूसरा धर्म स्वीकार करना। फिर 'भासित' गुरु-द्रोह से अंतरात्मा की पुकार पर इतनी कष्टदायक मृत्यु का वरण करना। मरते समय भी तेजस्वी शंकर को राह दिखाना साधारण कृत्य है क्या...?

•

आयुर्वेद मर्म

पंचकर्म एक्यूपंक्चर

पेन (दर्द)

AYURVEDIC REMEDIES

MARMA, PANCHAKARMA & ACUPUNCTURE

CLINIC

Looking for relief from pain or discomfort?

We provide Ayurvedic Marma, Panchakarma & Acupuncture services that focus on Bone, Joint and Nerves.

- Manage chronic pain
- Enhance your overall mobility & function

www.ayurvedicremedies.org

+91-860-1124-100

D 4/426, VIJAYANT KHAND
GOMTI NAGAR, LKO

# मानस में गोमती अर्थात् मनुष्य के मन और बुद्धि का सम्बन्ध

- विनीता मिश्रा

रामायण का जिक्र करें या रामचरितमानस का, अयोध्या से लेकर लंका तक राम के वनवासकाल में नदियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा। जिस प्रकार मानव सभ्यता नदियों के किनारे पनपी और फली-फूली, ठीक उसी तरह रामचरितमानस भी नदियों के किनारे-किनारे उसी तरह आगे बढ़ी जैसे कोई मानव हिमालय की गोद के उच्च शिखरों से मानवता का कल्याण करने की खातिर नदी का रूप धरे, धीरे-धीरे आगे बढ़ता है और फिर समुद्र जैसी विशालता को प्राप्त होता है। शिव के मन रूपी मान सरोवर में बसी यह रामकथा जब उनकी बुद्धि रूपी हिमालय के शिखर से विचार की गंगा बनकर संसार के कल्याण के लिए धरा पर उतरती है तो पूरी मानवता का कल्याण करने के लिए राम के जीवन का आदर्श प्रस्तुत करती चली जाती है। राम की इस कथा में गंगा जैसी निर्मलता और पवित्रता समाई हुई है जो इस धरती पर उतरती है केवल और केवल धरा का कल्याण करने के लिए। परंतु आज मैं बात करने जा रही हूँ एक ऐसी नदी की जो राम की कथा के लिए कैकई की तरह अपने यश और पावनता को भी दाँव पर लगा बैठी; राम को राम बनाने में जिसने अपने अपयश की भी परवाह नहीं की।

भरत की भक्ति और प्रेम यदि रामायण की गंगा है तो एक ऐसी नदी है जो मुझे कैकई की तरह महान लगती है जिसकी बुद्धि और मति गौ माता की तरह संसार कल्याण में निहित है परंतु उसे मनुष्य को मोक्ष प्रदान करने का अधिकार भी प्राप्त नहीं है और वह है गऊ जैसी मति वाली "गोमती"।

वैसे तो गोमती गंगा की सहायक नदी है किन्तु इसे गंगा की अन्य सहायक नदियों से जो बात अलग करती है वह है इसका उद्गम स्थल। गोमती नदी का उद्गम स्थल पीलीभीत का मैदानी इलाका है, जहाँ पर गोमत ताल नामक जल स्रोत से गोमती की उत्पत्ति होती है। इसे फुलहर झील भी कहते हैं। पीलीभीत से ये नदी लखीमपुर, खीरी आदि जिलों से होती हुई सीतापुर पहुंचती है जहाँ इसके किनारे नैमिषारण्य, चक्रतीर्थ एवं दधीचि आश्रम स्थित है जिनकी पहचान

आज भी चिन्हित है। रामचरितमानस में सबसे पहले गोमती का प्रसंग बालकाण्ड में ही हो जाता है जब मनु महाराज अपनी धर्मपत्नी के साथ राज-पाट त्याग कर भगवान के शरणागत होने के लिए इस क्षेत्र में तपस्या करने आते हैं। नैमिषारण्य के आश्रम में विभिन्न ऋषियों-मुनियों से उनकी भेंट होती है और गोमती के तट पर ही वे सपत्नीक द्वादश अक्षर मन्त्र के द्वारा भगवान के लिए तप करते हैं और इसी नदी के तट पर भगवान उन्हें दर्शन देते हैं। इस प्रसंग का बखान करते हुए तुलसीदास जी ने गोमती को धेनुमति के नाम से संबोधित किया है:

**पहुंचे जाइ धेनुमति तीरा। हरषि नहाने निरमल नीरा।।**

इसी गोमती के तट पर मनु शतरूपा ने कठिन तपस्या कर भगवान के साकार रूप का साक्षात् दर्शन पाया।

दोनों पति-पत्नी टकटकी लगाए भगवान को निहार रहे हैं, न वे पलक झपका पा रहे हैं और न भगवान अंतर्धान हो पा रहे हैं। भगवान के बार-बार कहने पर भी दम्पति कोई वरदान नहीं मांग रहे हैं। मनु जी कहते हैं, "अब इस रूप को देखने के पश्चात किसी भी वरदान की न इच्छा रही, न आवश्यकता।" पर भगवान कुछ दिये बिना जा नहीं सकते अतः मनु महाराज मांग लेते हैं:-

**चाहउं तुम्हहिं समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।।**

और इस प्रकार भगवान को उनके प्रेम के आगे विवश होकर यह वरदान देना पड़ता है। भगवान कहते हैं- "त्रेता युग में जब वे कोसल देश के राजा होंगे और शतरूपा उनकी पत्नी कौसल्या होंगी तब वे उनके पुत्र के रूप में अवतरित होकर उनकी इस मनोकामना को पूरा करेंगे।" अतः सरयू के किनारे राम का जन्म और गंगा की तरह उनकी कथा की निर्मल सरिता; जिसे बार-बार रामायण में सुरसरि और देवनदी कहकर संबोधित किया गया है, इन सभी का कारण इसी गोमती नदी का पवित्र किनारा बना। जहाँ मनु महाराज और देवी शतरूपा ने द्वादश अक्षर मन्त्र "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" की सार्थकता को प्रमाणित कर दिखाया। गोमती साक्षी बनी मन्त्र, प्रेम और पूर्ण समर्पण की शक्ति और प्रभाव की। गोमती को रामचरितमानस में धेनुमति के नाम से संबोधित किया गया है जिससे हमें इस नदी के गऊ के समान मति अथवा स्वभाव वाली नदी होने का भी बोध होता है जो सदा सबके कल्याण के लिए ही निहित होती है। जीवनपर्यंत अपने दुग्ध, मूत्र, गोबर यहाँ तक कि अपनी संतान को भी मानवता के लिए न्योछावर

करती रहती है और मरणोपरांत भी उसके चर्म से हम अपने पैरों को सुरक्षा देते रहते हैं। हम जिसे पूजते हैं, उसे ही हम अपने चरणों के नीचे भी स्थान दें तो भी वह हमारी रक्षा ही करती है। यही गोमती नदी जो भगवान के अवतरण के एक कारण की साक्षी बनी, वही भगवान जब राम रूप में अपने अवतार के कार्यों के सम्पादन हेतु वन गमन करते हैं तो उनके चौदह वर्ष के वनवासकाल की अवधि का आरम्भ होते ही उसका तट ही निवास बनता है और जैसे वह ही राम के प्रेममय अवतरण को मर्यादित रूप में रूपांतरित होने की साक्षी बनने की परम अधिकारिणी है। राम अपने चौदह वर्ष के वनवास की दूसरी रात्रि का ठाँव गोमती के किनारे बनाना निश्चित करते हैं:

**तमसा प्रथम दिवस करि बासू। दूसर गोमति तीर निवासू।**

प्रेम और मर्यादा का यह रूपांतरण यहीं थमता नहीं है बल्कि भरत जब राम के वनवास के बारे में जानते हैं और व्याकुल होकर उनसे मिलने के लिए अयोध्या से चल पड़ते हैं तब भरत भी यही मार्ग लेते हुए चित्रकूट तक पहुँचते हैं। राम की खड़ाऊँ लेकर भरत अयोध्या को लौट रहे हैं तब गोस्वामी जी ने तीसरी बार गोमती का उल्लेख किया है:

**सई उतरि गोमती नहाये। चौथे दिवस अवधपुर आये।**

अब गोमती देख रही है प्रेम, भक्ति, समर्पण और सेवाभाव की पराकाष्ठा को भरत के रूप में। इस प्रकार दशरथ से लेकर राम और फिर भरत तक के महान प्रेम और प्रेम की मर्यादा से ऐसी अभिभूत हुई गोमती कि राम जब रावण का वध कर धरती को अत्याचारियों से मुक्त कर, उसका भार हरण कर अयोध्या लौटते हैं तो अपने धनुष-बाण को गोमती के निर्मल जल से धोकर शुद्ध करते हैं, गोमती रावण वध के पाप को धोकर स्वयं उस पाप को धारण करती है और एक ऐसी परंपरा का आरम्भ होता है कि नैमिषारण्य जैसे स्थान को पवित्र करने वाली गोमती स्वयं अब किसी के लिए मोक्षप्रदायिनी नदी की मान्यता खो देती है और वह इस पाप को ढोती रहती है चुपचाप। ठीक उसी तरह जैसे राम को राम बनाने के लिए कैकेई चुपचाप सौतेली माता होने का कलंक ढो रही है। दोनों ही माताएं राम के राम होने में अपना मूक योगदान समाहित कर रही है।

इस प्रकार गोमती में स्नान और तर्पण आदि की प्रथा नहीं रही। यह स्थान आज भी 'धोपाप' के नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले में

गोमती नदी का एक घाट है जहाँ अब एक राममंदिर स्थापित है। इस स्थान तक लखनऊ से सड़क मार्ग द्वारा जाया जा सकता है। यहाँ पर केवल एकादशी को स्नान करने की मान्यता है। पीलीभीत में गोमत ताल से निकलने वाली गोमती नदी लखीमपुर, खीरी, हरदोई, शाहजहांपुर, सीतापुर से लखनऊ पहुंचती है और अवध की परम्पराओं के बदलते रूपों को महसूस करती है फिर आगे बढ़ जाती है। बाराबंकी, सुल्तानपुर होती हुई जौनपुर में गंगा में मिल जाती है। सारे के सारे पाप गंगा के सुपुर्द कर देती है और गंगा किसी माँ की भांति उसे अपने अस्तित्व में समो कर चल पड़ती है विशालता के पथ पर। जहां ब्रह्म की भांति सागर प्रतीक्षित है उसे एक अनंत विशालता प्रदान करने को तीर्थों के तीर्थ गंगासागर के रूप में। हमारी ये छोटी सी इठलाती बल खाती नदी विलीन हो जाती है गंगासागर की गहनता में, जैसे ब्रह्म में विलीन हो जाता है जीव, परमात्मा में विलीन हो जाती है आत्मा।

आश्चर्य होता है अपने ऋषि-मुनियों के ज्ञान पर और संसार को उससे जोड़ कर रखने वाली प्रक्रिया पर। आज भौगोलिक विज्ञान से हम जान चुके हैं कि गोमती एक ऐसी नदी जिसका उद्‌गम स्थान एक मैदानी क्षेत्र है तथा उसके जल स्रोत का एक कारण उसके मार्ग में आने वाले तमाम भूगर्भ स्थित जल के भण्डार हैं जिनके मुखों के द्वारा गोमती को निरंतर जल आपूर्ति होती रहती है परन्तु इन प्राकृतिक कुँओं के कारण गोमती एक ऐसी नदी है जिसमें सबसे अधिक भँवर पायी जाती हैं। अतः इसमें स्नान करना, तैरना कतई सुरक्षित नहीं है। जिसे कितने सरल तरीके से एक सर्वविदित और सर्वमान्य सिद्धांत के रूप में संस्कृति का हिस्सा बनाकर प्रत्येक व्यक्ति को उससे जोड़ दिया गया। इसी मान्यता के कारण आधुनिक युग में भी बहुत सारे व्यक्ति अपने अंतिम समय में लखनऊ को त्यागकर गंगा किनारे बसे हुए शहरों में चले जाते थे।

आधुनिकता का अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम स्वयं की मुक्ति और उत्थान के ही विषय में सोचें, हमें अपनी नदियों के प्रति भी अपने कर्तव्यों को समझना होगा। आज गोमती के विनाश का आरम्भ उसके उद्‌गम स्थान से हो चुका है। इसके उद्‌गम स्थान पीलीभीत में ही अनेक निर्माण कार्यों ने इसके साथ अन्याय किया और कई स्थानों पर जहां कभी गोमती बहती थी आज वहाँ से गायब हो रही है, भूजल का दोहन भी इसके लिए अभिशाप ही है। रही-सही कसर शहरों में इसके भीतर गिराया जाने वाला गन्दा पानी है जो इसे जी भर कर प्रदूषित कर

रहा है। 'धोपाप' में जाकर मन आनंद से भर गया मगर फिर गोमती की दशा देखकर दुःख से भर गया। कहीं हम अपने विकास के नाम पर गोमती को गंगा से मिलने से पहले ही विलुप्त न कर दें और उससे उसका अनंत में विलीन होने का अधिकार भी छीन लें। गोमती का विशाल हृदय और धेनु जैसे उसकी सबका कल्याण करने वाली मति क्या हमारी इस भूल को क्षमा कर देगी? क्षमादान के लिए भी उसका अस्तित्व तो बनाए रखना पड़ेगा।

**लहरें हैं या नाद नदी में।**
**चप्पू की छप-छप है केवल, या तबले की थाप नदी में।**

**भोर की बेलासुरों का मेला, लहरों पर लहरों का खेला।**
**हृदय चक्षु से यदि देखो तो, ये रघुवर के पाद नदी में।**

**यह गंगा की बहन गोमती, निर्मल करती मति गोमती।**
**तनिक मान इसका भी धर लो, होती ये फरियाद नदी में।**

**गंगा जैसी निर्मल धारा, लेकर के ये प्रभु का सारा।**
**रावण वध का पाप भी हरती, कहती धो लो पाप नदी में।**

**अवध क्षेत्र में कलकल करती, तुलसी के मानस में बहती**
**धेनुमति के नाम से मिलती, कटते सब संताप नदी में।**

**आज जरा तुम आकर देखो, पास घड़ी दो जाकर बैठो।**
**कलकल धार न छप-छप छैंया, रुदन के साथ विलाप नदी में।**

**क्या थी तुमने क्या कर डाला, घट-घट मेरे बसे शिवाला।**
**अब प्रलाप से लगते हमको, कल तक थे आलाप नदी में।**

•

# C.V. NETRALAYA

CP 6A, Viram Khand-2, Gomti Nagar,
Lucknow
Mob. : 80525 10018

**Centre of Comprehensive Eye Care**

**Eye Surgeon**
**Dr. V. K. Mishra**

# एक और जिहाद

**– महेश चन्द्र द्विवेदी**

मीना पंडित
सियालकोट जेल

दिः 7 फरवरी, 2009

आदरणीय सम्पादक जी,

पता नहीं अपनी दुर्दशा के लिये मैं स्वयं के भोलेपन को दोष दूं, पुरुष की छलनामयी प्रवृत्ति को दोष दूं, अथवा धर्म के नाम पर प्रचलित अमानवीय परम्पराओं को दोष दूं, परंतु यदि मेरे भाग्य से मेरी यह दुःख भरी कहानी आप के पास तक पहुंच जाये, तो कृपा कर इसे प्रकाशित अवश्य कर दें। हो सकता है कि आप की इस अहैतुकी कृपा से मेरी यह व्यथा-कथा भारत के शासकों तक पहुंचकर उनको मुझे इस नारकीय जीवन से मुक्ति दिलाने को प्रेरित कर दे।

मैं जम्मू-कश्मीर प्रांत में अखनूर नगर से कुछ दूर चिनाब नदी के किनारे बसे एक छोटे से चिनरू नामक गांव की रहने वाली हूं। मेरे पिता प्रताप चंद्र पंडित प्रायमरी स्कूल के प्रधानाध्यापक होने के अतिरिक्त हिंदी भाषा के अच्छे लेखक भी थे; उनकी कहानियां और लेख कादम्बिनी, सरिता आदि पत्रिकाओं मे छपते रहते थे। उनका मेरे गांव और आस-पास के गांवों मे बड़ा सम्मान था। उन्हीं के प्रयत्न से मैंने प्रायवेट पढ़ाई करके गत वर्ष इंटरमीडियेट पास किया था एवं उनकी प्रेरणा से प्रेमचंद्र, शरतचंद्र, अज्ञेय आदि लेखकों की कई पुस्तकों को पढ़ा भी है। चिनाब अर्थात् चंद्रभागा का यह क्षेत्र हीर-रांझा की प्रेम-कथा के कारण जग-प्रसिद्ध है।

मेरे गांव में हिंदू और मुसलमान लगभग बराबर संख्या में हैं और सदियों से पारस्परिक भाईचारे और शांति के साथ रहते रहे हैं- एक दूसरे के शादी-विवाह, तीज-त्यौहार और जनम-मरण में बिना भेदभाव सम्मिलित होकर सहयोग करते रहे हैं। विगत पांच छः वर्षों से कुछ संदिग्ध युवकों के चुपचाप गांव में आने-जाने और आस-पास के गांवों में अकारण किसी न किसी व्यक्ति की हत्या कर दिये जाने की खबरें मिलने लगीं थीं। धीरे-धीरे लोग समझ गये थे कि हत्यारे और कोई नहीं वरन् लम्बे चोगे में रायफिल छिपाकर रात में खामोश वादियों का सन्नाटा भंग करने वाले आतंकवादी हैं। इस प्रकार की अकारण हत्याओं को रोकने हेतु मेरे पिता ने गांव मे मीटिंग आयोजित कर एक शांति समिति गठित की थी। यह समिति अनजान लोगों के गांव में आगमन और उनको अपने घर पर रखने वालों

पर निगाह रखने लगी। संदिग्ध व्यक्तियों के आगमन की सूचना पर गांव के लोग इकट्ठे होकर जाते और उन्हें अविलम्ब गांव छोड़ने को मजबूर कर देते। एक दिन ऐसे ही कुछ युवक गांव वालों को धमकी देकर गये थे कि वे उन्हें देख लेंगे। आसन्न खतरे की आशंका पर मेरे पिता ने पुलिस वालों को उनके आने और धमकी देकर जाने की सूचना दे दी थी। उसके पांचवें दिन ही जब मेरे पिता स्कूल से पढ़ाकर वापस आ रहे थे तो रास्ते में गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई थी। उनके मृत शरीर के निकट कागज की एक पुर्जी मिली थी जिस पर लिखा था,

''पाकिस्तान जिंदाबाद**!** हमारे रास्ते में रोड़े अटकाने वाले काफिरों का यही हश्र होगा। हिज्बुल-मुजाहिदीन।''

पिता के मृत शरीर को देखकर मेरे हृदय में उठे वेदना के ज्वार का अनुभव वह पुत्री ही कर सकती है जो अपने पिता की इकलौती लाड़ली संतान रही हो। पर उस वेदना को मैं पूर्ण रूप से आत्मसात कर पाती, उसके पहले ही मेरी माँ मूर्छित होकर धड़ाम से गिर पड़ी थीं और अपने को किसी प्रकार नियंत्रित कर मुझे माँ को संभालना पड़ा था। मेरी माँ की मूर्छा तब टूटी थी जब पुलिस वाले मेरे पिता के शरीर को कपड़े में बांधकर लेकर चलने लगे थे। तब मुझे अपने पिता के सदैव के लिये हमसे बिछड़ जाने का पूर्ण आभास हुआ था और मेरे नेत्रों में बस गये अश्रु धाराप्रवाह बहने लगे थे।

हम कुछ दिन तक शोक के सागर में डूबे रहे, परंतु लगता है कि प्रकृति ने प्राणियों को ऐसी जिजीविषा दी है कि गहरे से गहरा दुःख झेलकर भी वे शीघ्र प्रकृतिस्थ होने लगते हैं और जीवन की गाड़ी यथावत चल निकलती है। मैं और मेरी माँ भी धीरे-धीरे पुनः गाँव के ढुलमुल चलने वाले जीवन की सुनिश्चित राह पर वापस आ गये थे। पिता की मृत्यु के एक वर्ष की अवधि के पश्चात माँ की प्रमुख चिंता मेरा विवाह हो गई। वह प्रायः मेरे विवाह का प्रसंग छेड़ देतीं। मेरा किशोर मन उनकी बातों से उद्वेलित हो जाता और मैं मन ही मन किसी अनजान राजकुमार से अकस्मात मिलन की प्रतीक्षा करने लगती।

गत अक्टूबर के महीने में उस दिन ऐसी गुनगुनी धूप निकली हुई थी जिसके स्पर्श से बदन में हौले-हौले ऊष्मा के प्रवेश का आभास होता है। मैं माँ के साथ चिनाब नदी के एक एकांत किनारे पर नहाने गई हुई थी। यहाँ झाड़ियों के एक झुरमुट की आड़ में गाँव की स्त्रियाँ हमेशा समस्त कपड़े उतारकर नहाती आयी हैं। उसी प्रकार मैं और मेरी माँ भी वहीं नहाईं और मैं पानी में थोड़ा सा तैरी भी।

स्नान के उपरांत हम दोनों गाँव को वापस चले, तो एक झुरमुट की ओट से अकस्मात सामने आकर एक जवान, जो भारतीय जवानों की फौजी वेशभूषा में था, माँ से रास्ता पूछने लगा। वह प्रश्न तो माँ से कर रहा था परंतु उसकी तिरछी निगाह मुझे ही घूर रही थी। उसके होठों पर एक ऐसी व्यंग्य मिश्रित स्मित रेखा थी जिससे मुझे आभास हो रहा था कि जैसे उसके समक्ष अभी-अभी मेरा कोई रहस्य उजागर हुआ हो। तभी मेरी स्त्रियोचित बुद्धि में यह बात आई कि हो न हो, वह मुझे वस्त्रहीन अवस्था में स्नान करते देख रहा था और मेरी निगाह लज्जावश नत हो गई। जब मेरी निगाह उठी तो वह मुझे ही निहारते हुए दूसरी दिशा में जा रहा था।

यद्यपि लुक-छिपकर हमें नंगे नहाते देखने की धृष्टता पर मुझे उस युवक पर क्रोध आना चाहिये था परंतु इसके विपरीत देश के सिपाही की वेशभूषा में कंधे पर रायफल लटकाये उस गोरे-चिट्टे, लम्बे जवान की छवि मेरे मन को गुदगुदाने लगी थी। फिर दो दिन बाद सायंकाल जब मैं गांव के बाहर घास चर रही अपनी गाय को घर वापस ले जाने आयी, तो वह मेरे सामने आकर मुस्कराता हुआ खड़ा हो गया था। उसके इस प्रकार अप्रत्याशित मेरे सामने आ जाने पर मैं घबरा गई, तो वह कुशल चितेरे की भांति मिठास भरे स्वर में बोला था,

''तुम मीना हो?''

मेरे धीरे से हाँ कहने पर उसने कहा, ''तुम्हारा नाम बहुत खूबसूरत है'', और फिर कुछ रुककर पुनः बोला, ''और तुम भी।''

मैं लज्जावश निगाहें नीचे झुकाकर चुपचाप खड़ी रही, परंतु मुझे भान था कि वह अनवरत मेरी ओर देख रहा था, जिससे मेरे बदन में सिहरन सी हो रही थी। तभी उसने आगे बढ़कर मेरी भौंहों को चूमने का उपक्रम किया। मैं अविलम्ब प्रकृतिस्थ हो पीछे हट गई और गाय की रस्सी खींचते हुए घर की ओर चल पड़ी। मेरी दशा भांपकर वह खिल-खिलाकर हँस पड़ा और उसकी वह जलतरंग जैसी हँसी मेरे अंतस्तल में समाती चली गई। उसकी हँसी उस रात मेरे मन को गुदगुदाती रही।

इसके पश्चात वह कभी नदी किनारे, कभी खेत में, तो कभी वन में मुझसे एकांत में मिलने लगा और मैं भी उससे मिलन की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगी। शीघ्र ही उस चतुर चितेरे ने मुझे अपने मोहपाश में बांध लिया, तब एक दिन मेरी प्यारजनित परवशता के क्षणों मे मुझसे बोला,

''मीना! अब मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह सकता हूँ। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ। तुमने पूछा तो नहीं, पर मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ कि मैं तुम्हारी जाति का नहीं हूँ। क्या तुम्हारी माँ जाति के बाहर शादी को राज़ी होंगी?''

मैं जानती थी कि मेरी माँ ऐसे विवाह की बात सोच भी नहीं सकती हैं। अतः मेरे ना करने पर वह अपने स्वर में अतिरिक्त मिठास घोलकर बोला,

''रानी, तब तो एक ही रास्ता है कि तुम मेरे साथ पंजाब मेरे घर भाग चलो और हम दोनों वहाँ शादी कर लें। मैंने अपने घर वालों से इसकी रज़ामंदी ले ली है। शादी हो जाने पर तुम्हारी माँ भी मान जायेंगीं।''

मैं उसकी बात सुनकर दुविधाग्रस्त थी कि वह पुनः बोल पड़ा, ''मीना! मैं कल शाम 7 बजे नदी के किनारे उसी झुरमुट के पास तुम्हारा इंतजार करूंगा, जहाँ हमारी पहली मुलाकात हुई थी।''

फिर मुझे एक फ्लाइंग किस देते हुए मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह चलता बना।

उस रात मैं एक पल भी सो नहीं पाई। एक ओर ईशान, उसने अपना नाम ईशान बताया था, का अदम्य आकर्षण और दूसरी ओर माँ का ख़याल—मैं दोनों के बीच तपती रही। परंतु प्रथम प्रेम का आकर्षण अधिक भारी पड़ा। मेरे मन ने समझौता कर लिया कि आज नहीं तो कल माँ से अलग तो होना ही है, फिर अभी अलग हो जाने से कौन सा बड़ा फर्क पड़ेगा? शादी के कुछ दिन बाद माँ का आशीर्वाद लेने चले आयेंगे, तब माँ हमें अवश्य स्वीकार कर लेंगीं।..... और फिर ईशान के बिना जिया भी तो नहीं जा सकता है।

दूसरा दिन बड़ी ऊहापोह में कटा। माँ ने मेरा चेहरा देखकर एक बार पूछा भी, "मीना, क्या तबियत ठीक नहीं है?", पर मैं बात को टाल गई। जैसे-जैसे सूरज ढलने लगा, मेरी उद्विग्नता बढ़ती गई परंतु शाम को मैं उसके आने से कुछ पहले ही नदी किनारे पहुंच गई। उसने आते ही मेरा हाथ थाम लिया और उसे मजबूती से पकड़कर मुझे सितारों के पार की अनजान डगर पर ले चला। रात के अंधेरे में कुछ दूर चलकर हमें ईशान की तरह फौजी वर्दी में कुछ और जवान मिले, जिन्हें ईशान ने अपना दोस्त बताया। उनके साथ कुछ घंटे चलकर हम एक गांव के एक निर्जन मकान में गये। हमने वहाँ खाना खाया और कुछ देर आराम करने के बाद फिर सब लोग चल दिये। थकान के मारे मेरे पैर जवाब दे रहे थे परंतु ईशान का साथ और उसकी प्यारी प्यारी बातें मुझमें बार-बार चलते रहने का उत्साह भर

देती थीं। उसने बताया था कि सुबह से पहले वे सुरक्षित स्थान पर पहुंच जायेंगे, जहां से उन्हें पंजाब के लिये बस मिल जायेगी। सुबह होते-होते हम एक कस्बे में पहुंच चुके थे। उस कस्बे में घुसने से पहले ही ईशान ने अपनी फौजी वर्दी उतार कर साथियों को दे दी और एक पठान सूट पहन लिया। उसके साथी उसकी वर्दी लेकर वापस हो लिये। चलते समय जब उन्होंने 'भाभी जान, ख़ुदा हाफिज' कहा, तो मुझे बड़ा अजीब-सा लगा। पर मैंने अपनी जिज्ञासा को दबाये रखा। हम बस स्टैंड गये जहां सब कुछ उर्दू में लिखा था जो मेरे लिये अपठनीय था।वहां पहली बस चलने को तैयार खड़ी थी और हमारे बैठने के कुछ मिनट बाद ही चल दी।

मुझे बस में बैठी सवारियों की वेशभूषा और बातचीत सब कुछ असहज लग रहे थे, परंतु मैं भयवश कुछ बोल नहीं रही थी। एक घंटे में बस एक नगर में जाकर रुकी और ईशान उतरने का उपक्रम करने लगा, तब मैंने ईशान से धीरे से पूछा,

''हम कहाँ आ गये हैं?''

ईशान ने धृष्टतापूर्ण मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया, ''सियालकोट''।

मैंने घबराकर पूछा, ''पर यह तो हिंदुस्तान में नहीं है?''

ईशान ने उसी मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया, ''पंजाब में तोंहै।''

मेरे काटो तो खून नहीं; मैं इतनी हतप्रभ और किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई कि ईशान द्वारा रिक्शे में बैठने को कहने पर चुपचाप उसके साथ बैठ गई। एक पुराने से घर के सामने पहुंच कर ईशान ने सांकल खटकाई। मुंह में पान दबाये सलवार-कुर्ता में उभरी हुई तोंद दिखाते हुए एक मोटी-सी औरत दरवाज़ा खोलकर हक्की-बक्की सी हमारे सामने खड़ी हो गई।

''आदाब अम्मीजान'', ईशान ने मेरा हाथ पकड़ कर दरवाज़े के अंदर घुसते हुए कहा। मेरे मन में अपनी वर्तमान स्थिति के विषय में जो संदेहरूपी घन उमड़ रहे थे, वे इस सम्बोधन से और गहन होने लगे और घबराहट से मेरा चेहरा विवर्ण हो गया।

उसकी अम्मी ने ईशान को कोई उत्तर देने के बजाय मुझे संदिग्ध निगाहों से घूरते हुए प्रतिप्रश्न किया, ''यह कौन है?''

''मीना'' ईशान ने भेद भरी निगाह से देखते हुए कहा।

''मीना कौन?'' उसकी अम्मी ने मेरी उपस्थिति को नकारते हुए खड़ा प्रश्न किया।

ईशान का अवज्ञापूर्ण उत्तर था, ''हिंदुस्तान से लाया हूँ। हिंदू है।''

''या अल्लाह! क्यों?''

''शादी करूंगा।''

''तौबा, तौबा। हिंदू से?''

''नहीं, पहले मुसलमान बनाऊंगा। मौलवी साहब का कहना है कि काफिरों की लड़कियों को मुसलमान बनाना भी एक जिहाद है।'' ईशान ने यह कहते समय मेरी ओर देखना भी आवश्यक नहीं समझा।

तब ईशान की अम्मी मेरी ओर घूरते हुए ईशान से बोलीं, ''और तबस्सुम का क्या होगा? वह तो घर को उठाकर सर पर रख लेगी।''

फिर ईशान की अम्मी के चेहरे पर भय की एक छाया प्रकट हुई और वह पुनः बोल पड़ीं, ''तुमने यह भी सोचा है कि किसी ने पुलिस को खबर कर दी तो क्या होगा? आजकल हिंदुस्तानी जासूसों की घुसपैठ के नाम पर पुलिस बड़ी सख़्त हो रही है।''

ईशान तुरंत बोला, ''मैं आज ही निकाह कर लूंगा। फिर पुलिस मेरी बीबी से कुछ नहीं कह पायेगी।''

यह कहकर वह मेरा हाथ पकड़कर घसीटता सा अंदर ले चला। उसकी अम्मी भी पीछे-पीछे आने लगीं। ठीक उसी तरह घसीटे जाने का आभास होने पर जिस तरह मैं अपनी गाय को घसीटा करती थी, मेरे अंदर प्रतिरोध करने का साहस उदय हुआ। मैंने ईशान की ओर देखकर दृढ़ता से कहा, ''मैं मुसलमान नहीं बनूंगी।''

ईशान ने मुझे घूरकर देखा और घसीटकर एक कमरे में ले जाकर बाहर से सांकल लगा दी।

इस बीच तबस्सुम आंगन में आ गई थी, और परिस्थिति को समझने का प्रयत्न कर रही थी। वह ईशान से पूछने लगी, ''यह किसको कमरे में बंद कर दिया है?''

''तुम्हारी सौत को।'' ईशान ने अधिकारपूर्ण स्वर में उत्तर दिया, और माँ से यह कहकर घर के बाहर चला गया ''निकाह की तैयारी करो, मैं अभी काज़ी को बुलाकर लाता हूँ।''

ईशान के जाते ही तबस्सुम बिफर पड़ी। फिर उसने साहस कर मेरे दरवाज़े की सांकल खोल दी और मुझे पीछे का दरवाज़ा दिखाते हुए कहा, ''भाग जा कलमुँही।''

मैं वहां से ऐसे भागी जैसे शिकारी के दौड़ाने पर खरगोश भागता है। पर्याप्त दूर पहुंचकर जब मैं कुछ संभली, तब मैंने थाने का रास्ता पूछा और हांफतेहुए कोतवाली पहुँच गई। वहाँ कोतवाल के सामने मुझे प्रस्तुत किया गया, जिसने कुटिल दृष्टि से मुझे घूरते हुए मेरी कहानी सुनी और व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला, ''हिंदुस्तानी जासूस है?''

मेरे यह कहने पर कि मैं सच बोल रही हूँ, उसने कहा, ''तेरी जैसी सैकड़ों को मैं रोज चराता हूँ।''

उसने मेरे विरुद्ध बिना वीज़ा पाकिस्तान आने और मुजाहिदीन को चकमा देकर जासूसी करने का इल्ज़ाम लगाकर मुझे जेल भेज दिया।

जेल में प्रथम दिन ही मुझे जेलर साहब के घर पर काम करने हेतु ले जाया गया। जेलर साहब का घर जेल परिसर में ही था। मैं दिन के बारह बजे जेलर साहब के घर पहुंची थी। उस समय वहां केवल बेगम साहिबा अर्थात् उनकी पत्नी उपस्थित थीं। बेगम साहिबा साढ़े पांच फुट की लम्बी चौड़ी काठी की अधेड़ महिला थीं- उनके चेहरे पर मर्दाना रुआब परिलक्षित हो रहा था।

बेगम साहिबा ने मुझे घूरकर देखने के पश्चात कहा,

''तुम्हें खाना बनाना है लेकिन तुम तो बड़ी गंदी हो रही हो। पहले गुसलखाने में जाकर नहा लो। नहा चुको तो दरवाज़े पर दस्तक देना, मैं तुम्हें साफ कपड़े पहिनने को दे दूंगी।''

मैं सचमुच मैली हो रही थी। बेगम साहिबा का उनके बंगले के गुसलखाने में नहाने का आदेश सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ और प्रसन्नता भी। बदन को रगड़ रगड़ कर नहाने के बाद मैंने कपड़े मांगने हेतु दरवाज़ा खटखटाया और उनकी आहट पाकर जैसे ही सिटकनी खोली, वह दरवाज़ा ठेलकर अंदर आ गईं। मैं लज्जा से लाल हो रही थी पर वह मुझे घूरे जा रही थीं और मेरी सद्यःस्नातः नग्न देह को देखकर उनकी आँखों में ऐसी चमक आ रही थी जैसी नागिन द्वारा चूहे का शिकार करते समय उसकी आँखों में आती होगी। उन्होंने बड़ी सहजता से मुझे अपने दोनों हाथों मे उठा लिया और अपने बेडरूम में ले जाकर पलंग पर पटक दिया। फिर वह अपने वस्त्र उतारने लगीं। अभी तक मैं उनकी निगाहों की चमक से मंत्रमुग्ध सी थी परंतु उनके द्वारा वस्त्र उतारने से हुए व्यवधान के दौरान मेरी संज्ञा वापस आ गई और मैं उठकर भागने का प्रयत्न करने लगी। तब बेगम साहिबा ने मुझे दबोच लिया और उत्तेजित हो मेरे बदन से निर्बाध खेलने लगीं।

प्रतिरोध का यथासम्भव प्रयत्न करने के पश्चात अपनी अक्षमता का भानकर मैंने अपने को भगवान भरोसे छोड़ दिया। संतृप्त होने के पश्चात ही बेगम साहिबा ने मुझे वस्त्र दिये। शाम को मैं मन और शरीर दोनों से दुखित व थकित होकर जेल की बैरक वापस आई और फर्श पर बिछी पुरानी दरी पर सोने जा रही थी कि मेरे बगल में लेटी कैदी महिला ने मुझे कनखियों से देखकर फुसफुसाते हुए कहा,

''कहो, जेलर साहब के यहां क्या हुआ?''

फिर स्वतः बोली, ''कोई बात नहीं। मैं सब जानती हूं कि क्या हुआ होगा। असल में वह साला जेलर अपनी रातें जेल में आने वाले नमकीन लौंडों के साथ बिताता है और उसकी बेगम अपने दिन चटपटी लौंडियों के साथ बिताती है।''

उसकी बात सुनकर मेरी आँखों से अविरल अश्रुधारा बह निकली। वह मेरे उन आंसुओं को तब तक सहानुभूति के भाव से देखती रही, जब तक मैं सो नहीं गई। दूसरे दिन फिर मुझे बेगम साहब के घर बलपूर्वक ले जाया गया और फिर यह सिलसिला रोज-रोज का हो गया। बैरक में मेरे बगल में लेटने वाली वह महिला कैदी रोज रात मेरे पिटे चेहरे और लुटे बदन को देखकर मुझ पर तरस खाने लगी। उसने एक रात मुझसे धीरे से कहा,

''तुम्हें छुड़ाने वाला यहां पाकिस्तान में तो कोई होगा नहीं, तुम चाहो तो हिंदुस्तान में अपने किसी सगे के नाम चिट्ठी लिखकर मुझे दे सकती हो। मैंने एक वार्डर को फांस रखा है; वह मेरे कहने पर उसमें टिकट लगाकर उसे डाक-बक्से में डाल देगा। अलबत्ता टिकट की कीमत के अलावा उसे पाँच रुपये देने होंगे।''

किसी-किसी दिन विशिष्ट संतुष्टि के होने पर बेगम साहब मुझे टिप दे देती थीं; मैंने वे पैसे जमा कर रखे थे। उन पैसों को देकर मैं यह पत्र अपने पिता के एक लेखक मित्र को इस अनुरोध के साथ भेज रही हूँ कि इसे किसी महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिका के सम्पादक को देकर प्रकाशन का अनुरोध कर दें। हो सकता है कि इसके प्रकाशित होने पर मेरी व्यथा-कथा की ओर भारत के राजनेताओं का ध्यान आकृष्ट हो और मुझे इस त्रासदी से उबारने हेतु शासन कुछ प्रयत्न करे। अन्यथा आत्महत्या के अतिरिक्त मुझे कोई विकल्प सुझाई नहीं दे रहा है।

अभागिनी,

'मीना'

•

# जिनके सहयोग के हम आभारी हैं

| | | |
|---|---|---|
| 1. | गंगा प्रसाद तिवारी | रु. 6000/- |
| 2. | पी के दीक्षित | रु. 5100/- |
| 3. | मीनू द्विवेदी | रु. 5000/- |
| 4. | ब्रिगेडियर शीतांशु मिश्र स्मृति स्व. पिता पं. आर के मिश्र 'मान भाई' | रु. 5000/- |
| 5. | श्री एस.एम. त्रिपाठी, चीफ फार्म, बलरामपुर अस्पताल | रु. 4500/- |
| 6. | श्रीमती शैल मिश्रा | (चेक) रु. 4000/- |
| 7. | श्रीमती मिथलेश आर के मिश्र स्मृति पुत्री सोनल मिश्रा | रु. 3500/- |
| 8. | सर्जन परेश शुक्ला | रु. 3500/- |
| 9. | चीफ इं देवेश शुक्ला | रु. 3500/- |
| 10. | श्रीमती मंजुला दीक्षित | रु. 3500/- |
| 11. | श्रीमती स्वाती पांडे | रु. 3500/- |
| 12. | श्रीमती दिव्या बाजपेयी स्मृति नाना स्व. रायबहादुर पं. उदित नारायण पाठक ऑफ सिसेंडी स्टेट | रु. 3000/- |
| 13. | श्रीमती दिव्या बाजपेयी स्मृति पिता जी स्व. जी.पी. शुक्ला | रु. 2000/- |
| 14. | श्री आशुतोष बाजपेयी स्मृति पिता स्व. उमाशंकर बाजपेयी | रु. 2000/- |
| 15. | श्री आशुतोष शुक्ला स्मृति माता श्रीमती विनोदिनी बाजपेयी | रु. 2000/- |
| 16. | श्री ए के त्रिपाठी | रु. 2000/- |
| 17. | डा डी एस शुक्ला स्मृति मौसी स्व. उर्मिला मिश्रा | रु. 2000/- |
| 18. | कु. प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा एडवोकेट | रु. 1500/- |
| 19. | श्रीमती आशा दीक्षित स्मृति- पति पं. रामकृष्ण दीक्षित सिलाई मशीन हेतु | रु. 6400/- |

## मंच पर पुरुस्कार पाने वाली छात्रायें

1- यति मदनगोपाल पाण्डे कक्षा xii नवयुग रेडियंस कालेज, राजेन्द्र नगर रु. 3000 प्रदत्त न्यायमूर्ति स्व. पं. जयशंकर त्रिवेदी, ब्रिगेडियर पछंगा लाल पांडे।

2- जया श्याम मिश्रा, बीए, शशिभूषण डिग्री कालेज, रु. 2000 प्रदत्त न्यायमूर्ति पं. दिनेश कुमार त्रिवेदी।

3- शगुन उमेश द्विवेदी कक्षा xi, बालविद्या मंदिर, लखनऊ, रु. 2000 प्रदत्त श्री सतीशचन्द्र मिश्रा, स्मृति में स्व. पं. आदित्य नारायण त्रिवेदी।

4- आरूही अवस्थी ix श्री एच पी इंटर कालेज शिवपुरी बहराइच, रु. 1000, 2000 प्रदत्त एस. शुक्ला स्मृति मौसी स्व. उर्मिला मिश्रा

5- गंगा प्रसाद तिवारी अपनी माता की स्मृति में अदित्री मिश्रा, भारत एकेडमी नौबस्ता, रु. 2100

6- आराध्या लवलेश त्रिपाठी, मोहनपुर बम्हेरा, सीतापुर, रु. 4500

## साइकिल पाने वाली छात्रायें

1- साक्षी तिवारी कक्षा xii रानी लक्ष्मीबाई मेमोरियल स्कूल, लखनऊ

2- तनु विजय कुमार अवस्थी ix, नेहरू विद्यालय, सिधौली, सीतापुर

3- अमृता त्रिवेदी x नवयुग सीनियर सेकेंडरी स्कूल, लखनऊ

4- राशिका मिश्र, कक्षा vi दयानंद कालेज, लखनऊ

5- प्रज्ञा शुक्ला, कक्षा viii दयानंद कालेज, लखनऊ

6- आराध्या अवस्थी, कक्षा viii दयानंद कालेज

7- अविष्का बाजपेयी, नेशनल पब्लिक स्कूल, आलमनगर

8- अनन्या मिश्र, कक्षा vii बाल निकुंज इंटर कालेज मोहिबुल्लापुर, लखनऊ

9- आंशी मदन गोपाल पांडे

10- आराध्या अवस्थी, कक्षा ix माँ पार्वती इंटर कालेज नानपारा, बहराइच।

## सिलाई मशीन प्राप्त करने वाली महिलायें

11- निशा द्विवेदी, नाका हिंडोला, लखनऊ

12- ओमश्री पाठक, अमेठी, सुलतानपुर

# सूची एवं पोस्टल एड्रेस कान्यकुब्ज वाणी
# आभा मण्डल

**3, संरक्षक-अनुदान** **रु. 10000.00 मात्र**

1- न्यायमूर्ति श्री डी के त्रिवेदी (अव.प्रा.) 9415152086,
6/169, विनीत खंड, गोमतीनगर, लखनऊ 226010

2- श्रीमती नीरा शर्मा पत्नी डा राजीव शर्मा आई ए एस
7A,डी-1 ओल्ड बंदरिया बाग, लखनऊ-226001

3- डा राजीव शर्मा आई ए एस, 9810722663
7A,डी-1 ओल्ड बंदरिया बाग, लखनऊ- 226001

4- श्रीमती रोली तिवारी, 9839882747, 7007369467
592-घ/01/07 Moharibagh, Near Mohari Bagh Masjid, Telibagh,
Lucknow-226029

**8 वाणी पुत्र-अनुदान** **रु. 5000.00**

1- डा यूडी शुक्ल (स्व)
अनुप्रिया क्लीनिक, सी-20/179 सेक्टर एच, आशियाना,
एल डी ए कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ

2- डा वी के मिश्रा मो.: 9415020426
CV नेत्रालय, मनीषा मंदिर के पीछे, विराम खंड-3, गोमती नगर
लखनऊ, 226010

3- स्व.इं. एस. एन. मिश्रा
O 84-रवीन्द्र गार्डेन, सेक्टर एम, अलीगंज, लखनऊ-226024

4- ललित कुमार बाजपेयी 9415034368
दक्षिणी जहानाबाद, आर्य समाज मंदिर के पास, रायबरेली

5- उदयन शर्मा s/o डा राजीव शर्मा
7A,डी-1 ओल्ड बंदरिया बाग, लखनऊ-226001

6- श्री प्रमोद शंकर शुक्ल 9450558657
सुरजूपुर, रायबरेली-229001

7- इंदेवेश शुक्ल 9450591538
आशियाना, लखनऊ

**3 अति-विशिष्ट सदस्य अनुदान** **रु. 3000.00**

1- श्री रामजी मिश्र, 9450379054
माखूपुर, खैराबाद, सीतापुर-261131

2- आर्क. अनुराग शुक्ला, 9415580950
निकट कृष्ण विहार कालोनी गेट, रायबरेली रोड, लखनऊ-226002

3- श्रीमती सुमन शुक्ला, 9838005179
D-80 केशव विहार, कल्याणपुर, रिंग रोड, लखनऊ

**13 विशिष्ट सदस्य अनुदान** **रु. 2000.00**

4- श्री सूर्य प्रकाश बाजपेयी, 9335159363
C-1/367 सेक्टर-एच, एल डी ए कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ-12

5- श्री उपेंद्र मिश्र, 9415788855
4/53 विशाल खंड, गोमती नगर, लखनऊ-226010

6- डा आर एस बाजपेयी

7- डा आर के मिश्र, 9415012333

8- पं. विनोद बिहारी दीक्षित (स्व)

9- पं. विजय शंकर शुक्ल (स्व)
10/304 इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016

10- डी के बाजपेयी, 9621479044
Omaxe Residency, 1, lilac-C, Flat no- 802, Gomtinagar
Ext. Sect.7, Sultanpur Road, Arjunganj, Lucknow-226002

11- प्रो. पीपी त्रिपाठी, 9450551394
वी.टी.एम. हास्पिटल, छोटा धूसाह, बलरामपुर-271201, बलरामपुर

12- डा प्रांजल त्रिपाठी, 9919879799
वी.टी.एम. हास्पिटल, छोटा धूसाह, बलरामपुर-271201

13- डा निधि त्रिपाठी
वी.टी.एम.हास्पिटल, छोटा धूसाह, बलरामपुर-271201, बलरामपुर

14- डा बी एन तिवारी, आई ए एस

15- मीरा शिवेन्दु शुक्ल, 9721756269
2A/67-आजाद नगर, कानपुर

16- लक्ष्मी कान्त शुक्ला
निकट कृष्ण विहारी कल्पनी गेट, रायबरेली रोड, लखनऊ-226002

17- पी के दीक्षित, 7905913042, 9838922347
स्नेहनगर, आलमबाग, लखनऊ-226005

18- सू. मेज. (रिटा.) आर एन तिवारी, 9893555368
592GA, मोहरीबाग खरिका तेलीबाग, लखनऊ-226006

19- प्रवीण शुक्ला, 9919331095
15/230 प्रभुटाउन, रायबरेली-229001

20- श्रीमती माधुरी शुक्ला, 9151190422
चूने वाली गली, स्वरूप नगर, कानपुर

**57 आजीवन सदस्य अनुदान** **रु. 1000.00**

21- श्री जितेंद्र कुमार त्रिपाठी, 9307222027, लखनऊ

22- पं भारतेन्दु त्रिवेदी, 9451194337
बमरौली हाउज, रम्पा टाकीज रोड, सीतापुर-261001

23- श्री रमारमण त्रिवेदी
ब्रह्मावली सदन, रम्पा टाकीज रोड, गांधीनगर, सीतापुर-261001

24- श्री के के त्रिवेदी, 9415020510
C-784, Sect-C, महानगर, लखनऊ-226006

25- श्री आर सी त्रिपाठी, 9415012040
ए-1055 लेखराज मार्ग, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016

26- श्री नवीन कुमार शुक्ल, 950666731
सेक्टर आई-ई 3/798 अलीगंज स्कीम, अलीगंज-226024

27- श्रीमति मीनू द्विवेदी, 9336166380
कानपुर 208002

28- इं बसंतराम दीक्षित, 9335075482
181 विजय नगर, कानपुर रोड, लखनऊ-226005

29- श्री सुधीर कुमार पांडे, 9415521031
52/166 भैरोंप्रसाद रोड, बड़ा चाँदगंज, लखनऊ

30- श्रीमती अर्चना तिवारी
E-59, सेक्टर-3, एनटीपीसी/ टीटीपी एस TALCHAR THERMAL POWER STATION, TALCHAR, ANGUL, ODISHA-759101

31- एडवो. कु. प्रेमप्रकाशिनी मिश्र, 9415026087
244/73 याहियागंज रोड, लखनऊ

32- श्री अनिल कुमार त्रिपाठी, 9415524848
14ए सिविल लाइंस, सीतापुर-261001

33- ब्रिगेडियर सीतांशु मिश्र, 9454592411
ए-22, त्यागी विहार कालोनी, शारदानगर, लखनऊ-226002

34- श्री कृपा शंकर दीक्षित, 9455713711
61/15 तिलूपुरवा, हुसेनगंज, लखनऊ

35- डा अनुराग तिवारी, 9415735630
2/346 डी, आजाद नगर, कानपुर-208002

36- श्री आर के शुक्ल, 9919623121
115, इंफीनिया पार्क, स्पेन्सर के पीछे, उदयन-2, एल्डिको,
रायबरेली रोड, लखनऊ-226002

37- डा आर सी मिश्र, 05226521353
फ्लैट नं 6/706, आरकिड ब्लाक, एल्डिको पार्क व्यू अपार्टमेंट,
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020

38- श्री विनोद कुमार मिश्र, 9919740633
60/10 इन्दिरा नगर, फतेहपुर 84, उन्नाव

39- श्री राजकिशोर अवस्थी, 9956084970
88, विष्णुलोक कालोनी, मानस नगर, साक्षारता निकेतन के पीछे,
कानपुर रोड, लखनऊ-226023

40- डा पी एन अवस्थी, 94153308555
C-50, निराला नगर, लखनऊ

41- श्री कौशल किशोर शुक्ल, 9335968454
3/51 गीतापल्ली कालोनी, आलमबाग, लखनऊ-226005

42- श्री विनय कुमार शुक्ल,9450350878
9/102 जवाहरनगर, रूरा, कानपुर देहात-209303, उत्तर प्रदेश

43- श्री मनीकान्त अवस्थी, 7607479838
87, खुर्शेदबाग, लखनऊ

44- श्रीमती अनुराधा शुक्ला पत्नी त्रयंबकेश्वर प्रसाद शुक्ला
खालीसहाट, रायबरेली

45- इं स्व. के बी शुक्ल, 9415004466
4/132A, विशाल खंड, गोमती नगर, लखनऊ-226010

46- श्रीमति हेमादिनेश मिश्रा, 9721975102, लखनऊ

47- श्री ब्रह्मशंकर दीक्षित, 9415049660
569क/108/4 स्नेहनगर, आलमबाग, लखनऊ

48- श्री शंभुप्रसाद पांडे, 9450717711
मलीहाबाद, लखनऊ

49- इं एस एस शुक्ल, 9450761403
2/306 सेक्टर A, जानकीपुरम, लखनऊ

50- श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी, मो. 9415115951
14/738, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016

51- श्री ज्ञानसिंधु पांडे, 8765531281
L-अ-L/231 सेक्टर L, आनंदनिकुंज, अलीगंज, लखनऊ-226024

52- श्री डी एन दुबे, आई ए एस, 9415408018
20/31 इन्दिरानगर, लखनऊ- 226016

53- श्री श्रीकांतदीक्षित, 9415766901
252-सेक्टर N-1 अलीगंज, लखनऊ-226024

54- उमेश चंद्रमिश्र, 9305245599
B-305, 'निर्माण', महानगर, लखनऊ

55- डा ओंकार नाथ मिश्रा, 9415022957
3/416, विश्वास खंड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

56- श्री अश्वनी कुमार शुक्ल, पंकाली चरण धाम, शिवनगर, लोढ़िगंज के पास, जीटीरोड फतेहपुर-212601

57- श्री राघवेंद्र मिश्र, 9918001628
2/78, विपुल खंड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

58- प्रफुल्ल कुमार पाठक, 7388192190
बन्नावाँ, बछरावाँ, रायबरेली

59- श्री आत्मप्रकाश मिश्र, 9415018200
3/132 बी, विपुल खंड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

60- श्री समीर बाजपेयी, 9415306363
35, कृषि संस्थान, नैनी, इलाहाबाद-211007

61- श्री राकेश कुमार मिश्र, 9335209896
सतगुरु सहाय निगम रोड, नगरिया, ठाकुरगंज, लखनऊ-226003

62- डा एस के त्रिपाठी, 9335917261
'आकांक्षा', 21 एल्डिको, पोस्ट-भदरुख, तेलीबाग बाजार के पास, लखनऊ-226002

63- श्री राजेशनाथ मिश्र, 9454292354, (पूर्व) सीनियर टाउन प्लानर (लखनऊ)
289/9 ब्लंट स्क्वायर (दुर्गापुरी), लखनऊ-226004

64- मालती विजय शंकर मिश्रा, 9336704017
डी-2156 इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016

65- राम कृपाल त्रिपाठी
182, इन्कम टैक्स कोआपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी, विनायकपुर, लखनऊ

66- सुरेन्द्रनाथ त्रिवेदी, 93352230767
25, मानस विहार, कूर्माञ्चल नगर, लखनऊ-226016

67- राकेश कुमार शुक्ला, 9005409001
मनोरमा सदन, खयालीगंज, लखनऊ

68- विमल कुमार जेटली, 9451246381
448/252ख, नगरिया, ठाकुरगंज, लखनऊ, 226003

69- श्री एस के मिश्रा
211बी, पार्क इंफीनिया, उदय नई, एल्डिको, रायबरेली रोड,
लखनऊ-226025

70- डा. परेश शुक्ला, 094-153-1745, 9793346656
C-2/179 सेक्टर-H, LDA कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ-226012

71- डा. एस एन शुक्ला, 9415464288
6, निराला नगर, लखनऊ

72- डा. राकेश शुक्ला (न्यूरोफिजीशियन)
कबीर मार्ग, सिंचाई भवन के सामने, लखनऊ

73- सर्वेश मिश्रा, 9086761122
चीफ मैनेजर IOB, विवेक खंड-1, ई-3/7 आम्रपाली योजना,
हाउसिंग बोर्ड, हरदोई रोड, लखनऊ,

74- डा अनुराग दीक्षित, 7007904857
डी-4/426, विजयंत खंड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

75- सुशील दीक्षित, 9415025097
569क/108/04, स्नेहनगर, आलमबाग, लखनऊ-226005

76- गंगा प्रसाद तिवारी, 8318859466

77- शारदा प्रसाद तिवारी, 9305421993

78- श्रीमती स्नेहलता तिवारी, 8935083183
4/बी, गजानन सहकारी समिति, निकट ए.के.टी.यू., जानकीपुरम विस्तार,
लखनऊ- 226021

79- सौमित्र बाजपेयी, 9473837390
27/23, मानस गार्डेन कालोनी, बीबीडी यूनिवर्सिटी के पीछे,
अखिलेश दास कालोनी, फैजाबाद रोड, लखनऊ-226028

80- निर्मल कुमार S/o स्व. श्री सुन्दर लाल मिश्र
एम-1020, सेक्टर-एम, आशियाना, कानपुर रोड, एलडीए कालोनी,
लखनऊ-226012

81- वीरेन्द्र कुमार शुक्ला S/o स्व. श्री राजेश्वरी प्रसाद शुक्ला
9सी/261, वृन्दावन योजना, लखनऊ

82- अजय त्रिवेदी पुत्र श्री कृष्णकांत त्रिवेदी
सी-2/79, विशेष खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

83- श्रीमती सरला शुक्ला, पत्नी अमेन्द्र नाथ शुक्ला
293/199, पुराना हरिहर नगर, लखनऊ-3

## बाहरी प्रान्तों के सदस्य

### विशिष्ट सदस्य-

1- अनामिका शर्मा, 09990455986
ए-81, 1st फ्लोर, निकट आर्य समाज मंदिर, मालवीय नगर,
नई दिल्ली, 110017

### आजीवन सदस्य-

2- डा. आर के त्रिपाठी, देहरादून, उ.खंड, मो 09935478815

3- Neeraj Trivedi, Mob: 09837077564
Gyanlok Colony, Behind Gaya Trilok Apartment, Byepass Road
Haridwar (U.K.) 249408

5- यतीन्द्र कुमार दीक्षित, दिल्ली, मो.: 98184343377
D-1241,अशोक नगर, स्ट्रीट-78, शाहदरा, दिल्ली-93

6- राम अवस्थी, मो 09820026914
Flat A/1403, Newa Gardens, Plot No-1 Sect- 20A, Near MSEB
Substation Airoli, AiroliPatni Road, Airoli Navi Mumbai-400708,
Maharaashtra

7- अशोक कुमार तिवारी, मो 09300104481
Block No- 5, Ganga Sagar Colony Behind BT Bungalow,
P.O. Gaira Jabalpur, M.P.-482003

8- अशोक कुमार पाठक, मो. 09407290639
Near Trivedi Printers, Kasturaba Ward, Pipariya,
Hoshangabad, M P-461775

9- वैज्ञानिक अलका दीक्षित, 011 32320268
Solid State Physics Lab. (SSPL), Timarpur, Delhi-110054

10- श्रीमती सविता दुबे, W/o Mohan Prasad
KIDZEE Plot No-1 Behind KCD Quarters, Barkotri Road,
Dharvad, Karnatak-580003

11- देवेन्द्र कुमार शुक्ला, मो 09414075174
C-100, Vidyut Nagar, Chitrakoot Road, Jaipur, Rajasthan-302021

12- पं. शिवशंकर तिवारी, मो.: 09490119947, 090300511007
2-4-48, 1st floor, Tewari Sadan, M.G. Road, Ramgopal pet,
Sikandarabad, Andhra Pradesh-500003

12- Shishir Kumar Bajpai S/o Late B N Bajpai Mob. 09899041178
987 Housing Board Colony, Sect-29, Faridabad,
Hariyana- 121008

13- प्रदीप चंद्र तिवारी, मो 094140977679, ई-मेल
misra.suman07@yahoo.com
5/45 गोवर्धन विला, RHB कालोनी, एचआईजी स्कीम, रेयान
इन्टरनेशनल स्कूल के सामने, उदयपुर, राजस्थान-313002

14- डा. अश्वनी कुमार बाजपेयी
आदर्शनगर, छतरपुर, मध्य प्रदेश

15- श्रीमति मनोरमा त्रिपाठी, 9783160465
7/358 सेक्टर 7, मालवीय नगर, जयपुर, राजस्थान-302017

## दूरस्थ देश के सदस्य

15- Viajy Shukla Cc/o Dr. Girish C. Shukla
Shukla Villa, A4-18, PaschimVihar, NEW DELHI-110 063

## अति विशिष्ट सदस्य (अफ्रीका)

16- जितेंद्र पांडे, युगांडा 9638145145, 876547694
Local: 301, Paramount Apartment,
New Berry Road, Behind Ganna Sanasthaan, Dalibagh,
Lucknow-226001

17- अनुराग शुक्ला
मैरीलैंड, वाशिंगटन, सयुंक्त राष्ट्र अमेरिका

•

# शिशिर श्रृंगार

**– डॉ. शोभा बाजपेयी**

खेत खलिहानों की शोभा खूब रंगीली लगती है।
मदमाती मंद सुगंध पवन भी, बड़ी छबीली लगती है।।
कोयल, कागा, मोर की बानी खूब सुरीली लगती है।
जाड़ों में सूरज की गर्मी भी, बड़ी नशीली लगती है।।

चिड़ियों संग जब सखियां भी साग चुगने लगती हैं।
चटनी संग अठखेलियां भी, बड़ी चटकीली लगती हैं।।
कहीं गुड़ दहकता है तो कहीं रुपहली सरसों होती है।
गन्ने सी अपने गांव की बोली भी, बड़ी रसीली लगती है।।

गाजर, गोभी, मूली, शलजम दुशाले ओढ़े लगती हैं।
शिशिर की हल्की सी बारिश भी, बड़ी बर्फीली लगती है।।
ठिठुरन से भरी कुछ शामें तो ख़ास हठीली होतीहैं।
तब तपते की आंच भी, बड़ी शर्मीली लगती है।।

शरद में नव श्रृंगारित वसुधा भी, बड़ी उन्मादित लगती है।
ऋतुराज के स्वागत में कामनाएं कुलांचें भरती होती हैं।।
खेत खलिहानों की शोभा खूब रंगीली लगती है।
मदमाती मंद सुगंध पवन भी, बड़ी छबीली लगती है।।

•

# कबाड़

**– आलोक कुमार दुबे**

'बाबाजी, आपको कौन सा रंग अच्छा लगता है?' नन्हें मुदित ने अचानक केदारनाथ जी के कमरे में प्रवेश करते हुए पूछा?

आज मुदित लाल रंग की टी शर्ट व काला नेकर पहने था। केदारनाथ जी समझे शायद उसकी रंग की पसंद से आशय उसके कपड़ों से है। उन्होंने उसे प्यार से गोद में उठाते हुए कहा- 'तुम जो भी रंग पहन लेते हो मुझे वही अच्छा लगने लगता है।'

'पर मैंने तो रेड और ब्लैक दोनों रंग पहने हुए हैं फिर आपको कौन सा रंग अच्छा लग रहा है?' चार वर्षीय मुदित ने अपना दूसरा प्रश्न पूछा।'

'आपके इस लाल और काले में मुझे लाल रंग अच्छा लग रहा है' उन्होंने प्यार से कहा।

'अगर आपको लाल रंग अच्छा लगता है फिर आप सफेद कपड़े क्यों पहनते हैं?'

'हाँ यह तो ठीक है, मैं खुद अपने लिए सफेद रंग ही पसंद करता हूँ इसीलिए मैं सफेद कुर्ता पजामा पहनता हूँ।'

'आप तो मुझे कफ्न्यूज कर रहे हैं। अभी आपने कहा रेड कलर अच्छा लगता है और अभी आप व्हाइट कलर को अच्छा बता रहे हैं। मैं पापा को क्या आन्सर दूँगा कि आपको कौन सा रंग अच्छा लगता है?' मुदित ने प्रश्नवाचक निगाह से केदारनाथ जी की आँखों में झाँका। ये अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले बच्चे अपने उच्चारण में अंग्रेजी शब्दों का ही प्रयोग करते हैं, चाहे सामने वाला हिन्दी में ही क्यों न बात कर रहा हो।

'तुम्हारे पापा को मेरे रंग के पसंद की क्या जरूरत पड़ गई? इतने वर्षों से उसे मेरी पसंद न पसंद का पता नहीं है जो तुम्हें भेज दिया मेरे पास कि मुझे कौन सा रंग पसंद है।' केदार जी ने कुछ नाराज होते हुए कहा। 'बाबा जी अरे पापा ने थोड़े ही मुझसे पूछने को कहा, ये तो मैं आपसे पूछ रहा हूँ। आपको पता नहीं घर में पेन्टर आने वाला है, वह सारे कमरों में व्हाइट वाश करेगा और पापा ने उसे नेट पर दिखाया था मेरे कमरे में तो दीवारों पर मिकी और डोनाल्ड और कई सारे कार्टून भी बनायेगा और हाँ एक दीवाल पर पानी और मछली भी मुझे बनवानी है मुझे कलर फिश अच्छी लगती हैं न।'

'अच्छा तो यह बात है। मकान की पुताई होने जा रही है मुझे क्या पता तुम किसलिए रंगों की बात कर रहे हो? कब से आ रहा है पुताई वाला?' केदारनाथ जी ने मुदित से पूछा।

'पता नहीं!' मुदित ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

'अरे! तुम्हें पता नहीं। तुम तो प्रायः कहते हो मुझे सब पता है।' केदारनाथ ने हँसते हुए मुदित को दुलारते हुए कहा।

इस पर वह चुप ही रहा फिर कुछ सोचकर गोद से उतरने के लिए मचलने लगा और नीचे खिसकते हुए उसने अपने दोनों हाथ सीधे कर लिए और फिसल कर केदारनाथ की गोद से उतर गया। किसी एक स्थान पर ज्यादा देर रुकना बच्चों की आदत में नहीं होता। वह कमरे से दौड़ लगाकर बरामदे में खड़े पुराने स्कूटर पर खड़ा हो गया और हैंडिल घुमाते हुए मुँह से स्कूटर के चलने की आवाज निकालते हुए खेलने लगा।

केदारनाथ ने पीछे से आवाज लगायी - 'सँभल कर कहीं चोट न मार लेना नहीं तो अभी तुम्हारी माँ मुझे ही ताना मारने लगेगी।'

अभी पिछले महीने की तो बात है मुदित इसी प्रकार केदारनाथ के कमरे के बाहर खड़ी साइकिल का पैडल हाथ से घुमा रहा था फिर न जाने उसे क्या सूझा कि पैडल पर पैर रख कर खड़ा होने लगा, परिणामतः साइकिल उसके ऊपर गिर पड़ी। थोड़ी बहुत चोट भी लगी और मुदित के रोने पर बहू मीनाक्षी देर तक बड़बड़ाती रही थी- 'न जाने क्यों ये सब कबाड़ की चीजें घर में इकट्ठा कर रखी हैं? अभी बच्चे को कुछ हो जाता तो? ये भी नहीं सोचते हैं घर में आने-जाने वाले लोग क्या सोचते होंगे। घर में कार होते हुए पुरानी साइकिल, पुराना स्कूटर, पुराना रेडियो आदि न जाने क्या-क्या इकट्ठा कर रखा है। मुझे तो शर्म आती है जब कोई मिलने वाला या रिश्तेदार ड्राइंगरूम से उठकर बाबूजी के कमरे में उनसे मिलने चल देता है।'

उसकी बातों से परेशान होकर केदारनाथ का बेटा अनूप उठ कर उनके कमरे में आकर बोला- 'बाबूजी मीनाक्षी ठीक ही कर रही है। आप क्यों यह साइकिल रखे हुए हैं? मुदित को आखिर चोट लग गयी कि नहीं।' केदारनाथ भी प्रतिउत्तर में बोल पड़े थे- 'खुद तो लड़का सम्भाला नहीं जाता है। चली है तुम्हारी बहू मुझ पर आरोप लगाने। अरे छोटे बच्चे शैतानी करते ही हैं और उन्हें देखना और टोकना भी पड़ता है। तुम भी तो कभी छोटे बच्चे थे और तब भी यह साइकिल घर में थी। इसी से तुमने भी साइकिल चलाना सीखा था। अब तुम्हारे अनोखा लाल हुआ

है जो घर का सारा सामान हटा दो।' अनूप चुप होकर कमरे से चला गया था। वह समझ गया था कि केदारनाथ जी को समझाना उसके बस से बाहर है।

केदारनाथ उठकर कमरे के बाहर बरामदे में आ गये और मुदित पर नजर रखकर उसे स्कूटर से खेलने में सहयोग करने लगे। उन्होंने मुदित को स्कूटर की गद्दी पर बैठाकर पकड़ लिया और वह दोनों हाथों से स्कूटर का हैंडिल घुमाकर टी.टी. की हॉर्न की आवाज मुँह से निकालकर खुश हो रहा था। कुछ ही देर में उसका मन इस खेल से भर गया। केदारनाथ ने उसे नीचे उतार कर खड़ा कर दिया। मुदित ने फिर केदारनाथ से प्रश्न किया- 'बाबा आपको स्कूटर चलानी आती है?'

'हाँ क्यों नहीं! तुम्हारे पापा जब छोटे थे तो वे तुम्हारी तरह आगे खड़े हो जाते थे और तुम्हारी दादी पीछे बैठ जाती थीं और हम लोग पूरा शहर घूम आते थे।'

'तो दादी अब कहाँ चली गई हैं? मुझे आपके और दादी के साथ स्कूटर पर घूमना है।'

'काश ऐसा होता!' ठंडी साँस लेकर केदारनाथ बोले- 'तुम्हारी दादी बहुत दूर भगवान के घर चली गई हैं इसीलिए तो यह स्कूटर यूँ ही खराब खड़ा है।'

'तुम्हारे पापा के पास इसे न तो ठीक कराने का समय है और न मुझमें इतनी ताकत है कि इसे खींचकर मैकेनिक के पास तक ले जा पाऊँ।'

'मैं पापा से कहूँगा वे इसे ठीक करा देंगे।' मुदित ने बड़प्पन से कहा।

'नहीं बेटा अब मुझे स्कूटर की जरूरत नहीं है।'

मीनाक्षी को लगता है अब टी.वी. सीरियल या फोन पर बात करने से फुरसत मिली होगी तभी उसने मुदित को आवाज लगाकर बुलाया। मुदित तुरन्त दौड़ लगाकर घर के अन्दर भाग गया।

केदारनाथ को सेवानिवृत्त हुए लगभग सात वर्ष हो गए थे। सेवाकाल के अंतिम वर्षों में उन्होंने अपनी बेटी और बेटे अनूप की शादियाँ कर दी थीं फिर अपने तीन कमरों के मकान में दो कमरे और बनवाये ताकि बहू-बेटे व बेटी-दामाद आदि को आने में कोई परेशानी न हो किन्तु सेवानिवृत्ति के दो वर्षों के बाद ही उनकी पत्नी उनका साथ छोड़ गई तभी से उन्होंने अपने आपको घर के पिछले हिस्से में बने कमरे में समेट लिया था। बहू मीनाक्षी ने अब अपने हिसाब से मकान को व्यवस्थित कर घर के अनुपयोगी सामानों को केदार के कमरे में व उनके कमरे के बाहर बने बरामदे में रख दिया था। किसी रिश्तेदार के यह कहने पर कि मृत सास की तस्वीर ड्राइंगरूम में क्यों लगा रखी है, यह अशुभ होता है वह फोटो भी केदारनाथ के

कमरे में लगा दी गई। उनके लिए तो यह अच्छा ही हुआ उठते-बैठते सोते-जगते वह अपनी पत्नी की फोटो से मन ही मन बातें जो कर लिया करते थे।

मीनाक्षी के कमरे में जब से नया एल.ई.डी. टी.वी. आया, पुराना टी.वी. भी केदारनाथ के कमरे में आ गया यह कहकर कि आपको बोरियत न हो इसलिए आपके कमरे में टी.वी. लगा दे रहे हैं। पुराना टू-इन-वन जिसके कैसेट तो आने ही बंद हो गये सिर्फ आकाशवाणी के कार्यक्रम सुनने लायक रह गया था, केदारनाथ के कमरे में आ गया था। बहू के लिए नया एफ.एम. का रेडियो सेट आ गया था। केदारनाथ इससे संतुष्ट थे क्योंकि उन्हें आकाशवाणी के कार्यक्रम ही सुनना अच्छा लगता था। एफ.एम. पर बेहूदे गाने उन्हें नहीं सुहाते थे।

केदारनाथ अपने पलंग पर आकर लेट गए। मुदित का प्रश्न उनके मन में घुमड़ने लगा- 'आपको कौन सा रंग अच्छा लगता है?'

यही प्रश्न तो उनकी पत्नी ने किया था जब वह साड़ी की दुकान पर अपने ऊपर साड़ी के पल्लू डाल कर देख रही थी। उन्होंने तब भी यही कहा था- 'तुम जो भी पहन लो, वही रंग अच्छा लगता है।'

'धीरे बोलिये, दुकानदार क्या सोचेगा?'

'अरे इसमें क्या? मैं तो तुम्हारे प्रश्न का ही उत्तर दे रहा हूँ।'

घर में पुताई कई वर्षों बाद होने जा रही थी। पहले तो लगभग हर वर्ष दीवाली के पहले घर की पुताई चूने से हो जाया करती थी। जब से यह महंगे इनैमल पेंट लगने लगे और एक-एक कमरे में रेगमाल से घिसाई फिर पुट्टी फिर घिसाई और फिर पेंट का रिवाज चल पड़ा। प्रत्येक वर्ष की पुताई के लिए सोचना ही कठिन हो गया है।

ढाई वर्ष के मुदित के हाथ में जब से चाक और कलर आ गये उसने सारे घर की दीवारों को ही स्लेट बना डाला था। अब वह कुछ समझदार हुआ है और सिर्फ कागज पर ही लिखना और रंगना शुरू कर दिया है। शायद इसीलिए अनूप और बहू ने घर में पुताई कराने की सोची होगी।

''और का ! जरूर जई बात होय्ये'' अरे फिर वही देहाती भाषा। पर मन में उठ रहे उत्तर में भाषा पर कैसे रोक लगायी जा सकती है।'' केदारनाथ ने खुद को समझाया।

मुदित जब छोटा था तो उसे घुमाने और बहलाने के लिए मीनाक्षी अक्सर

केदारनाथ के पास छोड़ जाती थी। फिर जब वह दो वर्ष के आस-पास था तो अचानक मुदित का केदारनाथ के पास आना कम होने लगा। एक दिन जब उन्होंने इसका कारण जानना चाहा तो बहू मीनाक्षी का उत्तर सुनकर अवाक रह गए थे- 'कल को इसका एडमीशन कान्वेंट स्कूल में करवाना है। आपके पास रहकर देहाती भाषा सीख रहा है, आगे चलकर परेशानी होगी।' कई दिन तक बिलकुल चुप रहे थे केदारनाथ। यह सच था कि उनका बचपन गाँव में बीता था इस कारण बोलचाल में कुछ तथाकथित देहाती भाषा का प्रयोग अनजाने में ही हो जाता था। अपने पूरे सेवाकाल में उन्हें कभी किसी ने नहीं टोका जब कि वह सेक्शन अफसर के पद से सेवानिवृत्त हुए थे किन्तु अब घर पर उन्हें सोच-सोचकर बोलना होगा, इसकी तो कभी कल्पना उन्होंने नहीं की थी।

'बाबा यह कबाड़ क्या होता है?'

मुदित ने आकर उनकी तन्द्रा भंग की। 'ऐसी वस्तु जो किसी के काम की न हो उसे कबाड़ कहते हैं परन्तु तुम क्यों ऐसा पूछ रहे हो?'

मम्मी पापा से कह रही थी, 'पूरा घर कबाड़खाना बना रखा है। व्हाइट वॉश के साथ सारा कबाड़ भी बेंच डालना।'

'बाबा**!** अपने घर में क्या-क्या कबाड़ है?'

'अरे बेटा मुझसे क्यों पूछ रहे हो? अपनी माँ से ही पूछो। सबसे बड़ा कबाड़ तो मैं ही हूँ अब, किसी काम का नहीं रहा।'

'फिर आपको कौन खरीदेगा?' भोलेपन से मुदित ने पूछा।

'कोई नहीं**!**' केदारनाथ ने उदासी से कहा।

'अच्छा बाबा जी**!** यह बताइये आप तो कह रहे हैं जो चीज काम की नहीं होती, वह कबाड़ होती है फिर कोई इसे खरीद कर क्या करता होगा?' मुदित ने फिर प्रश्न किया।

'क्यों बाबा को परेशान कर रहे हो? चलो अपने कमरे में।' पीछे आकर अनूप ने मुदित को डाँटा।

'नहीं यह मुझे परेशान नहीं कर रहा है। अच्छी बातें कर रहा है। बच्चों के प्रश्न का उत्तर भी मिलना चाहिए।' केदार ने कहा।

'आप ही ने इसे सिर पर चढ़ा रखा है तभी निरर्थक प्रश्न किया करता है।' अनूप बड़बड़ाया।

'बच्चों के प्रश्न कभी निरर्थक नहीं होते। यह बात और है कि तुम्हें उसका उत्तर न आता हो।' केदारनाथ ने कहा।

'अच्छा आप इसके प्रश्न का उत्तर दें।' अनूप बोला।

'हाँ मैं दे रहा हूँ इसको उत्तर। जो वस्तु किसी एक की नजर में कबाड़ होती है वही वस्तु किसी दूसरे के लिए उपयोगी हो सकती है। क्या तुम चण्डीगढ़ का राक गार्डेन भूल गए, किस तरह कबाड़ की चीजों से पूरा गार्डेन गुलजार है। नित्य ही टिकट खरीद कर हजारों लोग उसे देखने आते हैं। तुम भी तो घूमने गए थे और वहाँ की फोटो खींचकर लाये थे। जरूरत है सिर्फ अपने सोच का दायरा बढ़ाने की, कल्पना शक्ति का सही उपयोग करने की। जिस रुई के बिनौले को और जिस चावल की भूसी को पहले बेकार समझकर नष्ट कर दिया जाता था, आज उसी से निकाले गये रिफाइण्ड आयल से देश की बहुत बड़ी जनसंख्या के लिए तेल की कमी पूरी होती है। ऐसी ही बेकार की वस्तुओं से हार्डबोर्ड और प्लाई आदि का निर्माण हो रहा है।' बोलते-बोलते उन्हें खाँसी आ गई।

अनूप ने मीनाक्षी को पानी लाने के लिए आवाज दी। वह जल्द ही पानी का गिलास लेकर आ गयी।

अचानक मुदित जो केदारनाथ की बातें ध्यान से सुन रहा था, बोला- 'बाबा मेरे पास एक रुपया है। आप कह रहे थे आप कबाड़ हो गए हैं और आपको कोई नहीं खरीदेगा। मेरा रुपया आप ले लो मैं आपको खरीदूँगा।'

'मैं इतना सस्ता नहीं हूँ जो तुम्हारे एक रुपये के बदले बिक जाऊँ?'

'तो फिर अब क्या होगा? मेरे पास तो एक ही रुपया है आप कितने रुपये में बिकोगे? मैं और रुपये पापा से ले लूँगा।' मुदित ने अनूप की ओर देखते हुए कहा।

'पापा से रुपए लेने की कोई जरूरत नहीं है मेरी कीमत तो तुम्हारे पास है।' केदारनाथ ने पोते को गोद में उठा लिया।

'वो कैसे ?' मुदित ने प्रश्न किया।

'मेरे गाल पर एक मीठी पप्पी दे दो, बस मैं बेमोल बिक जाऊँगा।' बस इतनी सी बात और मुदित बाबा के गले में झूल गया।

मीनाक्षी और अनूप भी केदारनाथ के चरणों में झुक गये।

•

# तलवार की धार के वे क्षण

**- डॉ. डी.एस. शुक्ला**

हर व्यक्ति के जीवन में कभी न कभी ऐसे क्षण आते हैं जब उसका कैरियर, और इज्जत दोनों दांव पर होते हैं।

सर्जरी की विधा क्रिमिनल के वकील से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। जिस प्रकार दफा 302 (वर्तमान में 103) में आरोपित जीवन और सजाये-मौत के बीच झूलता है। मरीज के जीवन साथ ही वकील की इज्जत और प्रैक्टिस दांव पर होती है उसी प्रकार सीरियस केसेज की सर्जरी के दौरान मरीज की जिन्दगी के साथ सर्जन का कैरियर और शोहरत तलवार की धार पर टिका होता है।

सर्जन की जिन्दगी में ये क्षण कई बार उपस्थित होते हैं। ऐसे में सर्जन का आत्मविश्वास ही उसका सबसे बड़ा संबल होता है।

एक छोटे जिले के जिला अस्पताल से सूबे के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल में तैनात हुये सर्जन के सामने भी उपस्थित हुई।

इस बड़े अस्पताल में वर्षों से कार्यरत नामी सर्जन्स के बीच अपनी पहचान खोजते हुये सर्जन के सामने भी आन पड़ी। अब तक नवागंतुक सर्जन को अस्पताल में पूरा स्टाफ भी पहचान नहीं सका था तब ही उनके सामने यह स्थिति आन पड़ी।

हुआ यूँ कि इस नवागत और अपेक्षाकृत कम उम्र के सर्जन की इमरजेंसी के दिन रोड एक्सीडेंट का मरीज आया। भर्ती के समय मरीज का चेहरा सफेद, माथे पर पसीने की बूंदों के साथ ही उसकी नब्ज गायब थी। ट्रेनी डाक्टरों के लिए यह मरीज शॉक (कानूनी भाषा में सदमा) की बुक पिक्चर था। भर्ती और मेडिकोलीगल की औपचारिकताओं को दरकिनार कर उसे ड्रिप, आक्सीजन लगाकर तत्काल इमरजेंसी वार्ड में शिफ्ट कर सर्जन आन इमरजेंसी को सूचित किया गया।

मालूम हुआ कि मोटरसाइकिल पर सवार इस व्यक्ति को एक जीप ने बाईं ओर से टक्कर मारी थी जिससे मरीज की बाईं जांघ की हड्डी फ्रैक्चर हो गयी थी और सीने के बाईं ओर नीचे की कई पसलियाँ भी टूट गई थीं। वैसे केवल जांघ की हड्डी टूटने से भी मरीज शॉक में जा सकता है। किन्तु उस केस में शॉक डेवेलप होने में समय लगता है। बाएँ और की नीचे की पसलियों के अन्दर की तरफ मानव की तिल्ली या स्प्लीन होती है जो ऐसी चोट से रप्चर या फट सकती

है। स्प्लीन के फटने से अत्यधिक रक्तस्राव के कारण मरीज कुछ मिनटों के अन्दर में शॉक में जा सकता है।

डाक्टरों को पढ़ाया जाता है कि रप्चर स्प्लीन के केसेज को तत्काल (अर्जेंट) सर्जरी ही मरीज को बचा सकती है। यह एक स्थिति है जिसमें सर्जन को अपनी ख्याति और कैरियर का विचार न कर चांस अवश्य लेना चाहिए। ऐसी सर्जरी में भी फिफ्टी-फिफ्टी चांस होता है। किन्तु बिना सर्जरी के 100% निश्चित मृत्यु! सर्जन ने भी तत्काल ऑपरेशन करना तय किया। अपने निर्णय के बारे में अपनी यूनिट के वरिष्ठ सूचित कर ऑपरेशन की तैयारी में लग गए। सहृदय वरिष्ठ ने ऑपरेशन के समय आने का वायदा किया। वरिष्ठ का साथ होना सर्जन के लिए बड़ा संबल था किन्तु अल्टीमेट जिम्मेदारी तो केवल सर्जन की ही थी।

फिर एकाएक मरीज सुपर वीआईपी हो गया। पता चला कि वह उसी जिले के इन्कम टैक्स आफिसर का पुत्र था। उसके सगे रिश्तेदार केंद्र में बड़े मंत्री थे। मरीज के बहनोई प्रदेश के विशिष्ट सांसद थे। सर्जन साहब मरीज की वीआईपी स्टेटस के अनुरूप अपने आत्मविश्वास को ऊपर उठा रहे थे कि सर्जन के कालेज-वरिष्ठ एक आर्थोपेडिक सर्जन को लेकर इमरजेंसी में नमूदार हुये। सीनियर ने बताया कि मरीज आगंतुक आर्थोपेडिक सर्जन भी मरीज के रिश्तेदार हैं।

वरिष्ठ ने बड़े भाई की भांति सर्जन को बताया कि मरीज की रिश्ते में बहुत राजनीतिज्ञ और शीर्ष अधिकारी हैं। उन्होंने यह भी बताया कि इनके रिश्तेदार केन्द्रीय मंत्री की हाल में ही मृत्यु हो चुकी है। इस मृत्यु के कारण परिवार पहले से ही अस्पतालों से आतंकित है। वे एक दूसरी ट्रेजेडी बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे। विपरीत परिणाम सर्जन के कैरियर लिए कल्याणकारी नहीं भी सकता है। ऐसे वी वीआईपी मरीज को मेडिकल कालेज भेज देना अधिक उपयुक्त होगा।

सर्जन साहब तब तक मरीज की जान बचाने के लिए कृतसंकल्प हो चुके थे। उन्होंने अपने सीनियर से गंभीरता से पूछा- "सर, क्या आप मरीज की जान बचाना चाहते हैं?"

जाहिर है कि सीनियर का उत्तर सकारात्मक था।

सर्जन ने बड़ी नम्रता से सीनियर व मरीज के रिश्तेदार डाक्टर से कहा- "देखिये, मरीज को अस्पताल लाने और अस्पताल में अब तक कम से कम दो घंटा अवश्य बीत चुका होगा। हम अगले आधा घंटे में ऑपरेट कर सकते हैं। किन्तु मरीज को मेडिकल कालेज शिफ्ट करने और मेडिकल कालेज की औपचारिकता

पूरी करने में कम से कम दो-तीन घंटे अवश्य लगेंगे। आप जानते हैं कि पल्सलेस मरीज चार घंटे में किडनी फेल्योर में जा सकता है। मेडिकल कालेज में सफल सर्जरी के बाद भी मरीज के बचने की संभावना कितनी रह जायेगी"।

सीनियर ने सहमत होते हुये पुनः एक वाजिब प्रश्न किया- "तुमने चार यूनिट खून के लिए कहा है। मरीज AB निगेटिव है। इस रेयर ग्रुप का ब्लड इतनी जल्दी कैसे मिलेगा"?

"सर, इस समय ब्लीडिंग रोकना प्राइम ऑब्जेक्ट है। ब्लड की प्रतीक्षा में पेशेंट विल ब्लीड-टू-डेथ (मरीज ब्लीडिंग से ही मर जाएगा)"।

'डेथ' शब्द का मस्तिष्क पर हथौड़े की भांति असर होता है। इस केस में भी हुआ**!**

"डाक्टर साहब, कृपया आप शीघ्र आपरेशन कर दीजिये" सीनियर से पहले मरीज के डाक्टर रिश्तेदार ही बोल पड़े।

सर्जन ने सीनियर से फिर पूछा- "सर, आप तो ऑपरेशन में मौजूद रहेंगे? इन्क्वायरी होने पर क्या आप कह सकेंगे कि सर्जन ने वही किया जो ऐसी परिस्थिति में जान बचाने के लिए आवश्यक था"?

सीनियर ने दृढ़ता से कहा-"हाँ, क्यों नहीं"।

सर्जन ने आश्वस्त होते हुए कहा-"मैं ऑपरेशन करता हूँ।" फिर मरीज के रिश्तेदार डाक्टर से कहा। "आप जाईये ग्रेड फोर की कंसेंट लिखवाकर आप भी ओ.टी. में उपस्थित रहें"।

इस अंतराल में यूनिट के वरिष्ठ सर्जन भी ओटी पहुँच गए।

सीरियस केसेज में केवल सर्जन ही तनाव में नहीं रहता; एनेस्थेटिस्ट, ओटी सिस्टर्स, वार्ड ब्वायज व सफाई कर्मचारी भी मरीज की सुरक्षा हेतु तनावग्रस्त हो जाते हैं। यह तनाव उन्हें अधिक तत्पर और रेस्पोंसिव (संवेदनशील) बना देता है।

सर्जन ने विनम्रता से मेन सर्जन का स्थान वरिष्ठ के लिए छोड़ कर स्वयं एसिस्टेंट के स्थान पर खड़े हो गए। किन्तु वरिष्ठ ने चाकू सर्जन को देते हुये कहा "नहीं**!** ऑपरेशन तुम्हीं करो"।

इमरजेंसी केसेज में इलेक्टिव सर्जरी की भांति लेयर-बाई-लेयर पेट खोलने का विधान नहीं है।

सर्जन खाल, मसल शीथ मसल्स को नाइफ के एक ही बोल्ड स्ट्रोक से काटकर पेट की झिल्ली तक पहुँच गए। झिल्ली खोलते ही स्प्लीन रप्चर की 'टेलटेल' साइन 'ब्लड' निकल पडा। वरिष्ठ के मुँह से संतुष्टि का स्वर निकला- "डायग्नोसिस इज राइट (डायग्नोसिस सही है)"।

दूसरे स्ट्रोक में सर्जन ने बाईं तरफ पसलियों के नीचे व समानांतर लगभग तीन इंच इन्सिजन बढ़ा दिया। इस प्रकार पसलियों काफी ऊपर स्थित स्प्लीन तक पहुंचना सुगम हो गया।

दाहिनी तरफ खड़े वरिष्ठ ने हाथ डालकर को स्प्लीन की फीडिंग आर्टरी को अंगूठे और तर्जनी से दबाकर फटी हुई स्प्लीन से बहते रक्त को रोक दिया। एनेस्थेटिस्ट ने ड्रिप तेज कर दी। सर्जन ने इसी बीच स्प्लीन को सारे अटैचमेंट्स से डिसेक्ट (पर्त-दर-पर्त अलग कर) स्प्लीन को मोबिलाइज कर बड़ी मुलायमियत से पेट कटाव के नीचे तक ले आये। इसके बाद लगभग पांच मिनट तक ओटी में सभी निस्तब्ध खड़े रहे। कुछ समय बाद एनेस्थेटिस्ट की वेल्कम वाइस से सन्नाटा टूटा- "मरीज की पल्स आ गयी"। सभी ने राहत की सांस ली।

मरीज की हालत सुधरने पर स्प्लीन के पेडिकल को फ्री कर के सुदृढ़ता बाँधने के पहले पैन्क्रियाज टेल (अग्नाशय का अंतिम पतला हिस्सा) को सावधानी से अलग कर लिया गया।

पैंक्रियाज ग्रंथि का रस प्रोटीन को पचाता है। पैंक्रियाज के चोटिल होने पर इसका रस पेट में रिसने लगता है। आंतें, लिवर सभी प्रोटीन के बने होते हैं, जिन्हें यह जूस पचाने लगता है। ये सर्जरी में सबसे घातक स्थिति होती है। अतः इसका सर्जन्स सदैव ध्यान रखते हैं।

संभावित स्राव के निकलने हेतु पेट में ड्रेन डाल कर पेट आराम से बंद कर दिया गया। मरीज को पोस्ट ऑपरेटिव वार्ड में शिफ्ट करते समय मरीज का ब्लड प्रेशर 110/60 आ चुका था। ऑपरेशन के पहले माँगा ब्लड देर रात तक उपलब्ध हो सका। ब्लड लगने से रिकवरी भी आसान हो गयी।

कहने की जरूरत नहीं कि मरीज सर्जरी विभाग से आठवें रोज डिस्चार्ज हो गया। सर्जिकल यूनिट दफा 302 का केस जीत लिया था।

**नोटः** जांघ के फ्रैक्चर को ठीक होने में तीन महीने लग गये।

•

# अतीत की यादें

**– डॉ. आर.एन. भारद्वाज**
पूर्व डी.जी. चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें, उ.प्र.

होली का त्यौहार उमंग और उल्लास में हास्य-व्यंग्य का तड़का है। 50-60 के दशक की यादें अब भी शेष हैं। एक पात्र थे ज्ञानस्वरूप। उन्हें सब महाशय जी कह कर संबोधित करते थे। वस्तुतः वे नपुंसक थे इसलिए सदैव हीन भावना से ग्रस्त रहते थे। इसी के चलते वे सामाजिक संपर्क से बचते थे। होली पर सदैव अपने को घर में कैद कर लेते थे। परन्तु हाँ सब बहुत मनुहार करके उन पर रंग डालने के लिए घर से बाहर निकाल ही लेते थे। होली में उनके साथ परिक्रमा करते हुये नारा लगाते थे- होलिका माई की जय, भक्त प्रहलाद की जय। उसी बीच कोई वयस्क मसखरा बोल उठता था- "महाशय जी की जय"।

बच्चों को मौका मिल जाता था। सारे बच्चे समवेत स्वर में चिल्लाने लगते- "लू है, लूलू है।" इस विनोद से होलिका और होलिका की सुलगती दहकती गुलारियाँ (गोबर की मोटी गोलाकार जिसके बीच में छेद बना होता था) घर लेकर आ जाते जहां महिलायें घर में होली प्रज्ज्वलित कर होली पूजन कर होली तापतीं।

हमारे गाँव के एक अन्य चर्चित पात्र थे लालाराम शर्मा। शर्माजी महिलाओं की भांति लम्बे बाल रखते थे और जटायु के नाम से जाने जाते थे। लालाराम रोज कचहरी जाते थे। वहां वे पेड़ गवाह थे। केस चाहे जो हो, किसी का भी हो वे सदैव उसका गवाह बनने के लिए प्रस्तुत रहते।

इसके लिए शर्माजी काफी मशक्कत भी करते थे। वे बाकायदा मौकाए-वारदात पर जाकर वकील के बताये अनुसार दृश्य क्रियेट कर पूरी कवायद के बाद गवाही देते थे। उनकी गवाही इतनी पक्की होती थी कि उसे काट पाना विपक्ष के लिए मुश्किल होता था। इस प्रकार लालाराम शर्मा केस जिताऊ गवाह के रूप में विख्यात थे।

जिस प्रकार केस जिताऊ वकील बहुत महंगा होता है उसी प्रकार केस जिताऊ गवाह की फीस भी ऊंची होती थी। अपनी गवाही में उनकी अंतरात्मा गलत-सही या झूठ-सच का कोई विवेक नहीं करती।

एक बार एक गरीब विधवा की जमीन दबंगों ने हड़प ली। मुकदमा चला। शर्माजी ने मोटी रकम के बदले विधवा के विरुद्ध शत प्रतिशत झूठी पर पक्की गवाही देकर दबंगों के नाम जमीन करवा दी।

अदालती निर्णय के बाद उस लुटी हुई गरीब वृद्ध महिला ने शर्माजी को बहुत कोसा। उसके एक वाक्य जो वह बार-बार बदबदाती रहती थी, सब लोगों की स्मृति में आज भी गूँज रहा है। उसने शर्माजी को श्राप दिया- "झूठ गवाही का फल तुमका जरूर मिली। तुम्हारे कीड़ा परिहैं।"

इस घटना के कई साल बाद शर्माजी मुँह के कैंसर से त्रस्त होकर इलाज के लिए मेरे पास आये। किन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उनका कैंसर एडवांस हो चुका था। ट्यूमर फट कर घाव बन गया था। उस घाव में कीड़े बिलबिला रहे थे।

मुझे उस बुढ़िया का श्राप याद आया- "कीरा परिहैं"।

जिस मुँह से शर्माजी ने झूठी गवाहियां दी थीं, उसमें कीड़े पड़ चुके थे।

दुखी बुढ़िया का श्राप फलीभूत था।

•

## हास्याय

**चितांजलतं दृष्ट्वा वैद्यः विस्मयागातः।**
**न मेंगतः न मेंभ्राता, कस्य हस्तस्य कौशलम्।।**

(जलती हुई एक चिता को देखकर वैद्य अचंभित हो गया। (इस घर) न तो मैं गया, न ही मेरा भाई, फिर जाने किसके हाथ के कौशल से इस व्यक्ति की मृत्यु हुई।)

**वैद्यराज नमस्तुभ्यं, यमराजस्य सहोदरः।**
**अहंहरामीप्राणंवैद्यः प्राणं धनः अपिआई।।**

(हे वैद्यराज आपको प्रणाम है। आप तो साक्षात् यमराज के भाई हैं। यमराज तो केवल प्राणों का ही हरण करते हैं किन्तु वैद्य प्राण और धन दोनों का हरण कर लेते हैं।)

# आज नहीं

**– प्रमोद कुमार दीक्षित (राजन)**

।। श्री गणेशाय नमः।। कहानी का समय काल सन् 1965-66 के आसपास का है। कहानी के मुख्य पात्र दो हैं जिनमें से एक उस समय के एक ब्राह्मण परिवार के दंबग मुखिया हैं जिनका नाम उस समय लखनऊ सहित आस-पास के 4-6 जिलों में था। दूसरे पात्र एक मकान के सह-मालिक हैं जो रेल विभाग में फिटर की नौकरी करते थे। कहानी में पुराने लखनऊ के घटनाक्रम का वर्णन है। मनुष्य जब संसार में जन्म लेता है तो उसका पूरा जीवन तीन प्रकार की विवेषणाओं में बीत जाता है। उसका पूरा जीवन इन्हीं विवेषणाओं को पूरा करने में व्यतीत हो जाता है। मनुष्य की पहली विवेषणा वित्तेषणा होती है जिसके अंतर्गत उसका रहन-सहन, खानपान का स्तर, विभिन्न प्रकार से धन अर्जन करके अपने जीवन स्तर को सही कराकर लड़वा दिया। यह लड़ाई इतनी ज्यादा बढ़ी, बोले कि बाल्टी हटाओ, हमको नहाना है। हमने कहा भइया बाल्टी भर जाने दो तो उन्होंने कहा कि अबे जबान लड़ता है और उन्होंने मेरी बाल्टी बाथरूम से उठाकर आंगन में फेंक दी और हमको धक्का दिया तो हम भी आंगन के दूसरे किनारे पर जाकर गिरे। हम नीचे से चिल्लाये- चच्चू जल्दी आओ, देखो यह मुझको मार रहा है। इतना सुनकर रामनाथ चच्चू और मुनार चच्चू एक एक डंडा लेकर नीचे उतरे और विष्णु नारायन के ऊपर टूट पड़े। उसको मारते-मारते अध ामरा कर दिया। उसकी पत्नी दौड़ी तो उसको भी 5-7 डंडे मारे और दोनों के बाल पकड़ कर बाहर गली में घसीट ले गये और गली में दौड़ा-दौड़ा कर मारना शुरू किया।

पूरा मोहल्ला अपनी छतों पर खड़े होकर तमाशा देख रहा था और कह रहा था कि लगता है इस बार जबरदस्त किरायेदार आये हैं। मकान मालिक पति और पत्नी लहूलुहान हो गये। कुछ देर बाद विष्णु नारायन अपनी पत्नी को साइकिल पर बिठाकर बिरहाना पुलिस चौकी जो नाके थाने के अंतर्गत आती थी, रिपोर्ट लिखाने पहुंचे। चौकी का स्टाफ भी इस झगड़ालू मकान के बारे में अच्छी तरह जानता था कि अक्सर मकान मालिक और किरायेदार में झगड़ा होता है और आखिर में किरायेदार मकान छोड़कर भाग जाता है। चौकी पर दीवानजी एक सिंह साहब थे जो उन्नाव जिले के कई थानों में रह चुके थे। उन्होंने विष्णु नरायन को देखा तो पूछा- अरे लाला यह क्या हो गया? विष्णु नारायन सिन्हा बोले कि

हमारे भाई के पोरशन में किरायेदार आये हैं। उन्होंने ही मेरा यह हाल किया। दीवानजी धीरे से मुस्कराये और बोले- लाला आज यह उल्टी गंगा कैसे बहने लगी अभी तक तो तुम लोग तमाम किरायेदारों को मार कर भगा दिया लगता है इस बार कोई दबंग किरायेदार आ गये हैं। विष्णु नारायन बोले- साहब आप हमारी रिपोर्ट लिख लीजिए। दीवान जी ने कहा कि मारपीट करने वाले लोगों का नाम और हुलिया बताओ। विष्णु नारायन ने कहा- एक का नाम फुल्लर महराज हैं वह धोती कुर्ता पहनते हैं और दो उनके भाई हैं। फुल्लर महराज का नाम सुनते ही दीवान चौंक सा गया। चूंकि वह उन्नाव जिले के अचलगंज, बीघापुर, बारा सरवार आदि थानों में रह चुका था इसलिए वह फुल्लर महराज के नाम से अच्छी तरह परिचित था। उसने चश्मा उतार कर मेज पर रख दिया और विष्णु नारायन को बड़े ध्यान से देखने लगा। दीवान ने कहा कि वह धोती-कुर्ता के साथ रुपट्टा भी डाले रहते हैं और उनका शरीर गठीला और कसरती है। विष्णु नारायन ने चौंक कर दो बार हां-हां कहा।

दीवान ने कहा कि लाला तुमने किससे बयाना ले लिया। वह उन्नाव जिले के बहुत बड़े क्रिमिनल हैं और अचलगंज थाने में उनकी हिस्ट्रीसीट खुली है। दीवानजी ने कहा कि उन्होंने खुद तो तुमको मारा नहीं होगा। विष्णु नारायन ने कहा- नहीं उनके भाइयों ने मेरा तथा मेरी बीबी का यह हाल किया है। दीवानजी ने कहा- महराज छोटी-मोटी मारपीट नहीं करते हैं। इस तरह का काम वह अपने चेला-चापड़ से कराते हैं। महराज तो तभी हाथ डालते हैं जब आदमी को सीधे ऊपर पहुंचाना हो। कई को तो उन्होंने हाथ की पकड़ से ऊपर पहुंचा दिया। इतनी दम उनकी कलाई में है। वैसे ऐसा कोई असलहा नहीं है जो उनके पास न हों। दीवानजी ने कहा कि लाला रिपोर्ट तो हम लिख लेगें लेकिन महराज खिलाफ गवाही देने वाला मोहल्ले में तो क्या पूरे लखनऊ में कोई नहीं मिलेगा और बिना गवाहों के मुकदमा कैसे चलेगा। इतना सुनकर विष्णु नारायन और उनकी पत्नी सोच में पड़ गये। कुछ देर बाद वह बोले कि दीवानजी आप ही बताइए कि हम क्या करें।

दीवानजी ने कहा- लाला तुमने बहुत खतरनाक और क्रिमिनल लोगों से पंगा ले लिया है। हमारी राय है कि तुम लोग महाराज के पैर पकड़ कर माफी मांग लो अगर वह माफ कर दें तो ठीक है नहीं तो जान प्यारी है तो दूसरी जगह मकान लेकर रहने लगो। लाला ने कहा ठीक है। वह पत्नी को लेकर अमीनाबाद प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र गये और वहां अपनी तथा पत्नी की ड्रेसिंग कराकर घर

आ गये और सारे दरवाजे अंदर से बंद कर लिया। उनके बड़े भाई भी अपने पोरशन में दरवाजे बंद करके बैठे थे। दूसरे दिन जब मैं अमीनाबाद इंटर कालेज से घर आया तो बिल्कुल शांति का माहौल था। आज नीचे से पानी भरने के लिए या छत पर जाने के लिए किसी ने टोकाटाकी नहीं किया। आठ दिन तक सिन्हा परिवार घर के ऊपर ही रहता था। राशन सब्जी आदि बच्चों से मंगवा लेता था। 8-10 दिन बाद गांव में बड़े भाई का उपनयन संस्कार संपन्न हो जाने के पश्चात् महाराज लखनऊ आये। महराज ने जैसे ही साइकिल आंगन में खड़ी की वैसे ही विष्णु नारायन और उनकी पत्नी महराज के पैर पकड़ कर रोने लगे और बोले महराज आपके भाइयों ने हम लोगों का यह हाल किया है। बहुत बुरी तरह से मारा है। महराज ने कहा कि कल बात करेंगे। विष्णु नारायन ने कहा हम 8 दिन से अपने आफिस नहीं गये हैं। दूसरे दिन महराज ने हमसे दोनों लोगों को ऊपर बुलाया और सामने बैठाकर बात करने लगे। महराज ने कहा कि लाला तुमने अपने छोटे भाई को मार कर घर से निकाल दिया और 10-15 किरायेदारों को भी मार कर बाहर निकाल चुके हो। तुम कहीं के माफिया या दादा हो, जो इस तरह का काम करते हो। बेचारा तुम्हारा भाई दूसरी जगह 50/- रुपये महीने पर किराये का मकान लेकर रह रहा है। तुमने हमारे बेटे की बाल्टी फेंक दी और धक्का दिया इसी से हमारे भाइयों ने तुमको अभी खाली छोटा सा सबक सिखाया है। हमने रात में परिवार में टोह लिया है तो मालूम पड़ा जिन्होंने तुमको मारा है उन दोनों लोगों ने तुम्हारे मर्डर का प्लान बना लिया है। अब तुम जानो और वह लोग जानें। हमको तुम लोगों के बीच में नहीं पड़ना है। विष्णु नारायन सिन्हा फफक-फफक कर रोने लगा और बोला महराज हमसे बहुत बड़ी गलती हो गई। हमको माफ कर दो और मेरी जान बक्श दो, आपकी और आपके परिवार की जीवन भर सेवा करेंगे। महराज ने कहा अच्छा जाकर विचार करेंगे। लाला बोले महराज 8 दिन से मारे डर के आफिस नही गये हैं। महराज ने कहा ठीक किया उन लोगों ने हरीनगर से चारबाग के बीच तुम्हारे मर्डर का प्लान बनाया है। खैर कोई बात नहीं कल तुमको हम अपने साथ आफिस छोड़ने चलेंगे। लाला ने उठकर सपत्नीक महराज के पैर छुए और बोले दद्दू कल आफिस चलने से पहले चाय हमारे ही यहां आकर पीना।

दूसरे दिन विष्णु नारायन ने महराज के लिए अपने घर पर चाय-नाश्ता मिठाई आदि की अच्छी व्यवस्था की थी। चाय नाश्ता करने के बाद दोनों लोग बाबा 132 का पान किमाम के साथ खाकर हाथ में साइकिल का हैंडिल पकड़े

हुए पैदल-पैदल लोको वर्कशाप चारबाग की ओर चल दिए। रकाबगंज से नाका जाने वाली सड़क पर आने पर रास्तों में दसियों लोग दद्दू पायलागी, दादा प्रणाम महराज नमस्कार कर रहे थे। विष्णु नारायन यह सब बड़े ध्यान से देखा और कहा कि महराज आपको लखनऊ में हर तरह के बहुत लोग जानते हैं। अब हमारी समझ में अच्छी तरह आ गया है। जब यह दोनों लोग नाके चौराहे से पहले शीतल धर्मशाला के पास बायीं पटरी पर चल रहे थे तो चारबाग की ओर से 4-5 लम्बे-चौड़े आदमी सामने वाली पटरी पर आ रहे थे। उनमें से 3-4 आदमी रायफल बंदूक लिये हुए थे। उन्होंने दूर से ही महराज को देख कर दोनों हाथ जोड़ कर ऊपर करके कहा- महराज पायलागी। महराज ने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ ऊपर करके कहा खुश रहो और थोड़ा जोर से कहा "आज नहीं"।

इतना कहकर महराज और विष्णु नारायन आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे, फिर सोचा होगा जब महराज फिर मिलेंगे तो इसका मतलब पूछेंगे। महराज ने आगे चलकर विष्णु नारायन से कहा यही लोग तुमको जान से मारने के लिए गाड़ाल गाये हुए थे लेकिन हमने कह दिया। आज नहीं मतलब आज छोड़ दो। विष्णु नारायन वहीं साइकिल खड़ी करके महराज के सामने हाथ जोड़कर बिल्कुल रुआंसी मुद्रा में गिडगिड़ा कर कहने लगे। गुरू जी आज आपने हमारी जान बचा ली नहीं तो यह लोग इतने भयंकर और शक्ल से कतली लग रहे थे। यह सीधे हमें ऊपर पहुंचा देते। आपका यह अहसान हम जीवन भर नहीं भूलेंगे। नाके से आगे चलने पर नत्था होटल के सामने उस समय एक काफी मशहूर सरदार होटल था जिसके मालिक बाबा जस्सी सरदार जी थे वह और उनके साथी सुभाष कन्धारी उस समय लखनऊ के एकछत्र माफिया थे। सरदार होटल के सामने आने पर बाबा जस्सी ने महराज को झुक कर नमस्कार किया और बोले महाराज कहाँ जा रहे हैं, आइए चाय पी लीजिए महराज ने उनका हालचाल लिया और कहा यह विष्णु नारायन है, लोको में काम करते हैं। इनके यहां से चाय नाश्ता करके आ रहे हैं। फिर किसी दिन आयेंगे। यह देखकर विष्णु नरायन की हालत और भी पतली हो गयी। इस दिन के बाद महराज और विष्णु नरायन में गुरू चेला का रिश्ता कायम हो गया। इसके बाद विष्णु नरायन महराज के घर का सामान सब्जी आदि ला दिया करते थे। इस प्रकार हमारा परिवार उस मकान में वर्ष 1965 से लेकर 1983 तक लगभग 18 वर्ष सकुशल रहा। हमारी तथा हमारे दो बड़े भाइयों और एक बहन का विवाह संस्कार भी उसी मकान से हुआ। हम लोग वही रहकर अच्छी शिक्षा पायी और हम तथा हमारे बड़े भाई सचिवालय और बैंक में

सेवारत हुए। इस प्रकार वह छोटा सा किराये का मकान हमारे परिवार के लिए काफी फलीभूत हुआ। महाराज ने वर्ष 1983 में आलमबाग में सस्ते दामों पर 10,000/- वर्ग फीट का एक प्लाट लिया जिस पर उन्होंने अपने चारों बेटों के लिए चार पोरशन बनवाये। घर के आगे एक और जमीन लिया जिसमें 3000 वर्ग फीट में विशाल शीतला माताजी का मंदिर बनवाया जो आज भी दद्दू का मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रकार महराज अपने चारों बेटों-पोतों के बीचर हकर सुखमय जीवन बिताने लगे। महराज अपने स्वस्थ के प्रति सजग रहते थे। वृद्धा अवस्था आने पर कई बार बीमार पड़े तो हमारे पारिवारिक सदस्य एवं वरिष्ठ चिकित्सक आदरणीय डा. जी.एस.शुक्ला जीने उनको बलरामपुर अस्पताल में भर्ती कराकर अच्छे से अच्छा इलाज करवाया। महराज जब शाम को भवन के लान में बैठते थे तो कहते थे कि मेरा जन्म बैसवारा में पत्थर की हवेली में हुआ था और मान-सम्मान के संघर्ष में मेरा सब कुछ चला गया लेकिन माँ भगवती की कृपा से मुझे फिर से सब कुछ मिल गया। महाराज ने 91 वर्ष की आयु में चलते-फिरते अपने मेरे पूरे परिवार और नाते-रिश्तेदारों के बीच 11 दिसम्बर 1991 को देहत्याग किया। उनके पार्थिव शरीर पर प्रदेश के तीन बार मुख्यमंत्री तथा 2 बार केन्द्रीय मंत्री रह चुके नेताजी ने घर आकर पुष्पचक्र अर्पित किया। उनकी अंतिम यात्रा में लगभग 1000 लोग शामिल हुए जिसमें सभी वर्ग के नेता, व्यापारी, सरकारी अधिकारी, वकील, डॉक्टर, बैंक अधिकारी और कर्मचारी आदि शामिल हुए। महराज के जीवन से एक सबक मिलता है कि अच्छाई और बुराई के संघर्ष में सदैव जीत अच्छाई की होती है। कहानी में वर्णित व्यक्तियों और स्थानों के नाम काल्पनिक 10 है जिन्हें लेखक ने अपनी कल्पना से लिखा है। इनका किसी सच्ची घटना से कोई सम्बन्ध नहीं है।

स्नेहनगर, आलमबाग, लखनऊ-226005
मो.: 9838922347, 7905913042

•

नव संवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

उचित मूल्य पर विश्वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

# भारत
# मेडिसिन कम्पनी

*शहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान*

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखनऊ

विशेषता :

*जो दवाएँ शहर की अन्य दुकानों पर उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।*

दूरभाष : 9336666322, 0522–6568011
पंडित जी (तिवारी जी) का अंग्रेजी दवाखाना

# होली पर रंग किसे लगायें

– उपेन्द्र नन्दन शुक्ल

होली पर- रंग किसे लगायें
सबके सब बदरंग.....

सबके सब बदरंग रंग अब किसे लगायें।
सब हैं रंगे सियार रंग अब किसे लगायें।।
सबके सब बदरंग.....

है मण्डली विचित्र यहां बहुरुपिये सारे
व्यक्ति एक पर नित्य मुखौटे न्यारे-न्यारे
सबके गिरगिट ढंग रंग क्यूं व्यर्थ गंवाये
सबके सब बदरंग.....

पत्रकार बिक गये, झूठ छप गये, सत्य लटकाये उल्टे
अपराधी से मिले, सुरा पी लिये, पड़े नाली में उल्टे
काले मुंह पर और कौन अब रंग लगायें।
सबके सब बदरंग.....

नेता खटमल बने राष्ट्र को चूसा करते
सब आदर्श डकार गए पर भूखे रहते
ये नख शिख हैं भ्रष्ट दूसरा इन पर कैसे रंग चढ़ायें।
सबके सब बदरंग.....

भगवा कोई चांद सितारा, कहीं गुरुमुखी अमृतधारा
कहीं दिगम्बर श्वेताम्बर हैं, प्रान्त-प्रान्त में मत अन्तर है
तार-तार बहुरंगे आंचल में कैसे पैबन्द लगायें।
सबके सब बदरंग.....

●

# दाता एक राम...

**- डा डी के मिश्र**

साधु संत फकीर औलिया दानवीर भिखमंगे,
दो रोटी के लिए रात दिन नाचे होकर नंगे।

घात घात घूमें रे निहारी सारी दुनिया,
दाता एक राम, भिखारी सारी दुनिया।

राजा-रंक सेठ-सन्यासी, बूढ़े और नवासे,
सब कुर्सी की लिये फेंकते उलटे-सीधे पांसे।

द्रौपदी अकेली भिखारी सारी दुनिया,
दाता एक राम भिखारी सारी दुनिया।

कभी न बुझती प्यास प्यार की प्राणकंठ मा अटके,
घर की गोरी क्लब में नाचे, पीया सड़क पर भटके।

शादी-शुदा हो के कुवांरी सारी दुनिया,
दाता एक राम भिखारी सारी दुनिया।

पञ्च तत्व की बीन सुरीली मनवा एक सपेरा,
जब तेरा पापी दुनिया, रग्ग स्वार्थ का टेरा।

संबंधी हैं सांप, पिटारी सारी दुनिया,
दाता एक राम भिखारी सारी दुनिया।

•

# कीर्तन लाभ

**- स्व. इं. सत्यानन्द दीक्षित**

सुबह-सुबह जो सबसे रुचिकर समाचार मुझे दिया गया, उसके अनुसार अगले सप्ताह पड़ने वाले मंगल को कीर्तन का आयोजन हमारे यहां ही होना तय किया गया है। श्रीमती जी ने बताया कि उन्होंने बड़ी कठिनाई से आयोजन स्थल अपने यहां फिक्स करवाया, जबकि कई सामर्थ्यवान लोग जी-जान से जुटे थे कि अगले मंगल का कीर्तन उनके घर पर हो। मैंने गर्व से अपनी पत्नी को निहारा। वह गौरवान्वित थीं, जैसे अगले ओलम्पिक का आयोजन कड़ी स्पर्धा के बाद अपने देश में फिक्स करवाने में सफल रही हों। श्रीमती जी की इस कूटनीतिक सफलता से मैं भी उत्साहित था।

मेरे प्रसन्न होने के पीछे दो अतिरिक्त कारण भी थे। पहला तो यह कि किटी पार्टी जैसे धन-वैभव का प्रदर्शन करने वाले तामसी-राजसी आयोजनों से मुक्त हो, घर में शुद्ध सात्विक ऊर्जा का संचार होगा। कहते हैं प्रभु का नाम दीवारें तक सोख लेती हैं और बाद में लम्बे समय तक झंकृत होती रहती हैं। मैं कृतज्ञ हो उठा। मेरा मन भी राम मय हो गया, कृष्ण मय हो गया। गृह शुद्धि, बुद्धि शुद्धि, आचार शुद्धि, विचार शुद्धि जैसे तमाम शोधन कार्य, प्रभु नाम की करताल के साथ अपने आप जो जाएंगे। स्थायी भाव ले चुका कुरुक्षेत्र, अब धर्मक्षेत्र में रूपान्तरित हो जाएगा। ऐसे ही तमाम आशावादी विचार मन में घुमड़ने लगे। जब प्रभु संकीर्तन का समाचार ही इतना सकारात्मक प्रभाव छोड़ रहा है, तो साक्षात् भजन-कीर्तन कितना सुखदायक होगा। मैं अभिभूत था।

मेरी प्रसन्नता का दूसरा कारण मेरे लिए अति महत्वपूर्ण था। एक लम्बे समय से श्रीमती जी भजन-पूजन के मामले में रस्म अदायगी से आगे कभी नहीं बढ़ीं। टोकने पर, अपनी पिछले कई वर्षों से स्थिर हो चुकी उम्र का हवाला देते हुए यही बताया करतीं, कि यह सब बुढ़ापे में अधिक शोभा देता है और अभी उनकी उम्र भी ऐसी नहीं हुयी। इसे स्पष्ट करने के लिए वह अपने सदाबहार हाथ-पैर-कमर दर्द को दरकिनार कर, 'रम्भा हो' टाइप के कैसेट लाकर फुल वॉल्यूम में बजातीं। नाक भौंह चढ़ाने पर, मेरे बुढ़ापे का सर्टिफिकेट जारी करतीं। वैसे उसमें गलत कुछ भी नहीं, क्योंकि मेरी उम्र का गणित तो उनसे आगे-आगे चल ही रहा है। अब उन्होंने अनायास ही मुझे संकेत दे दिया था कि वह अपनी वास्तविक उम्र का

सम्मान करने लगी हैं। सालों से अटकी उम्र की सुई फिर सरकने लगी। उन्हें भजन-पूजन की सुध आयी थी।

श्रीमती जी उत्साह से आयोजन की तैयारी में जुट गयीं। मैं भी उसी उत्साह से उनकी तैयारी को पूरा करने की तैयारी जुटा था। चूंकि प्रतिष्ठित आयोजन था, इसीलिये प्रतिष्ठा की रक्षा करना पहला मुद्दा था। नए पर्दे, सोफे के नए कवर, कुशन कवर, दीवान कवर, टीवी कवर, जैसे हर तरह के कवर खरीदे गए। इस तरह पुराने घर, पुराने सोफे, पुराने कुशन, पुराने दीवान, पुराने टीवी, आदि को नया लुक दिया गया। भगवान की नई फोटो से लेकर भगवान की नई साड़ी तक पूरा नवीनीकरण किया गया। इस सबके पीछे का तर्क भी नायाब था। चूंकि उस दिन आने वाली सम्भावित महिलाएं पुरानी परिचित हैं और हमारे घर की सभी पुरानी चीजों को भली भांति पहचानती हैं, इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि इस बार उनको सब कुछ आमूलचूल बदला हुआ मिलना चाहिए, नया दिखना चाहिए। आखिर प्रतिष्ठा स्थापित भी तो इसी तरह होती है। जैसे-जैसे आने वाला मंगल नजदीक आता गया, जेब ढीली होती गयी, प्रतिष्ठा की मजबूत किलेबन्दी और सुदृढ़ होती गयी। श्रीमती जी इस किलेबन्दी का बार-बार मौका मुआयना करतीं, कमजोर कड़ियों को मजबूत बनातीं, सारी व्यवस्था चाक-चौबन्द बनाए रखतीं।

मंगल की पूर्व संध्या को मुझे अगले दिन के लिए आवश्यक सामानों की सूची पकड़ा दी गयी। पेपर रोल के डेढ़ फुट लम्बे टुकड़े में महीन अक्षरों में दर्ज, आवश्यक सामग्री की सूची थी वह। पूजन कार्य में नाना प्रकार का सामान लगता है। अगर सूची न बनायी जाए, तो कुछ न कुछ छूटने का अंदेशा बराबर बना रहता है। मैंने सूची पर नजर डाली तो चौंक पड़ा। डेढ़ फुट लम्बी सूची में माला-फूल जैसी पूजन सामग्री को मात्र डेढ़ इंच जगह ही मिली थी। शेष पूरे पट्टे पर जो सामान दर्ज था, वह समझ से परे था। खस्ता, समोसा, काजू, दालमोठ से लेकर कोल्ड ड्रिंक, फ्रूट जूस, रसमलाई, छेना मिठाई तक पूरी लिस्ट थी। पान, सुपारी, चंदन, तुलसी का कहीं पता न था, अलबत्ता सौंफ, इलायची, पान मसाला जरूर लिखा था। यह रहस्यमयी पूजन सामग्री मेरी समझ से परे थी।

मंगल भी आ गया, भजन-कीर्तन का धमाल दोपहर बाद प्रारम्भ हो गया। दफ्तर से छुट्टी दिला कर मुझे रसोई में प्लेटें लगाने का जिम्मेदारी भरा सौंपा गया। बच्चों ने वेटर का दायित्व सम्भाला। ढोल-ताशे की थाप और गलों से निकलते सुरों के साथ कीर्तन जोर पकड़ता गया। जैसे-जैसे कीर्तन

ऊंचाइयां पकड़ रहा था, मेरे ज्ञान चक्षु पूरे जोर पर थे। दूध के उबाल की तरह भजन-कीर्तन में उबाल आया, और ठण्डा हो गया। इस ठण्डक का कारण था, नाश्ते की प्लेटें और कोल्ड ड्रिंक के गिलास। सारे भक्त, भक्ति छोड़कर खान-पान में व्यस्त हो गये। समोसा-कचौड़ी का भोग लगाने लगे। भगवान आरती के प्रकाश में यह भक्त-लीला अपनी खुली आंखों से देख रहे होंगे। उनको बताशे-इलायची दाने का भोग तक नहीं और पूजा-पाठ पूर्ण। आरती भी चिल्लर जुटाने का जरिया बन गयी। डेढ़ फुट लम्बी लिस्ट का लगभग सवा फुट लम्बा हिस्सा, प्लेटों के जरिये अपना प्रभाव दिखा रहा था। भक्त आज की ईश वन्दना से प्रसन्न थे, तृप्त थे।

मैं सोच रहा था कि हमारे पूर्वजों ने निराकार ब्रह्म की साधना में लीन होने वाली कठिनाई को समझते हुए, आमजनों के लिए साकार ब्रह्म की कल्पना की थी और उसे समाज में स्थापित भी किया था। आज के समय में 'निराहार ब्रह्म' की वन्दना में भीड़ जुटाना कठिन देख, 'साहार ब्रह्म' की उपासना का प्रचलन चल निकला है। आहार प्रेमी भक्त, ब्रह्म के माध्यम से ऐसे भजन-कीर्तन समारोहों में लगने वाले 'आहार-शिविरों' की शोभा और आयोजकों की प्रतिष्ठा, दोनों बढ़ाते हैं। इस मंगल तो हमको यह सौभाग्य मिला, अगले मंगल किसी और को यह सौभाग्य मिलेगा।

•

## Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

### Form for lifemembership of Kanyakubj Sabha &/ or Kanyakubj Vaani magazine

1. Name of Member: ..........................................................................................
2. Age: .........................................................................................................
3. Gotra: .......................................................................................................
4 Father's/Husband's Name :..............................................................................
5. Address : ..................................................................................................
..................................................................................................................
6. landline/Mobile No.: ......................................................................................
7. Email : ......................................................................................................
8. Name of spouse / Father'sName :......................................................................
9. Education : .................................................................................................
10. Occupation (Post/Designation) :.......................................................................

| Unmarried Children | Name | Age | Education | Job |
|---|---|---|---|---|

a) ..................................................................................................................
b) ..................................................................................................................
c) ..................................................................................................................

11. Any other information :

**Date :** **(Signature)**

.....✂.........................................................✂.........................................................✂.........

## Reciept of Membership

Received with thanks from ...........................................................................
Rs.2200/-(two thousand two hundred only) from Shri/Ms. ......................................... as membership fees for membership of Akhil Bharatiy Shri Kanyakubj Pratinidhi Sabha and 'Kanyakubj Vaani'.

**Date** **Signature with Full Name**

Contribution for life membership of **Kanyakubja Vaani is Rs. 1100/-, Vishishta Member: Rs. 2000/- (A/c. No.77140100006054, IFSC Code-BARB0VJHAZR, Bank of Baroda, Hazratganj Branch, Lucknow). Form & cheque to be sent to Sri AK Tripathi, Haider Mirza Lane, Golaganj, Lucknow.**

Phone: 0522-4653145

Mob.: 8009161843
Email: hotelgangagreens@gmail.com

# होटल गंगा ग्रीन्स एन्ड रेस्टोरेन्ट (प्योज वेज़)

## 3, ब्लन्ट स्क्वायर, निकट दुर्गापुरी मेट्रो स्टेशन, चारबाग-मवैय्या रोड, लखनऊ

हमारे नवनिर्मित होटल भवन में ठहरने के लिए पूर्णतया वातानुकूलित लग्ज़री कमरे, 500 व्यक्तियों के लिए सुसज्जित पूर्णतया वातानुकूलित बैंक्वेट हॉल, स्वादिष्ट मिठाइयाँ, नमकीन एवं रुचिकर शुद्ध शाकाहारी भोजन के लिए पधारें।

**ब्राह्मण बंधुओं के लिए विशेष छूट उपलब्ध**

Meghdoot Plastic

CORAL plastics

# गृह उपयोगी प्लास्टिक उत्पादों का उत्कृष्ट कलेक्शन !

## APSARA BOTHROOM SET

CORAL plastics

## FURNITURE

**MG PLASTIC INDUSTRIES PVT. LTD.** | Helpline: 7007834029, 9151026012
visit us.www.mgplastic.in